छत्तीसगढ़ विधान सभा

की

अशोधित कार्यवाही

(अधिकृत विवरण)

पंचम विधान सभा षष्ठम् सत्र

मंगलवार, दिनांक 25 फरवरी, 2020

(फाल्गुन 06, शक सम्वत् 1941)

[अंक 02]

Website Copy

छत्तीसगढ़ विधान सभा

मंगलवार, दिनॉक 25 फरवरी, 2020

(फाल्गुन 06, शक सम्वत् 1941)

विधान सभा पूर्वाह्न 11:00 बजे समवेत् हुई.

(अध्यक्ष महोदय (डॉ. चरणदास महंत) पीठासीन हुए)

वाणिज्यिक कर मंत्री (श्री कवासी लखमा) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, ये पंचायत चुनाव आने के बाद काला पहनकर आये हैं।

समय :

11:00 बजे

<u>निधन का उल्लेख</u>

<u>श्रीमती देवेन्द्र कुमारी सिंहदेव, अविभाजित मध्य प्रदेश शासन की पूर्व मंत्री</u>

अध्यक्ष महोदय :- मुझे सदन को सूचित करते हुए अत्यन्त दुःख हो रहा है कि अविभाजित मध्यप्रदेश शासन की पूर्व मंत्री, श्रीमती देवेन्द्र कुमारी सिंहदेव का दिनांक 10 फरवरी, 2020 को निधन हो गया है।

श्रीमती देवेन्द्र कुमारी सिंहदेव का जन्म 13 जुलाई, 1933 को शिमला में हुआ था। आप सन् 1970 में सरगुजा जिले से राज्य समाज कल्याण सलाहकार बोर्ड की सदस्य नियुक्त हुईं तथा धान की नई किस्मों तथा गेहूं की खेती को बढ़ावा देने के लिए आप किसानों को प्रेरणा देती रहीं। आप प्रथम बार सन् 1972 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की टिकट पर अंबिकापुर निर्वाचन क्षेत्र से अविभाजित मध्यप्रदेश विधान सभा के लिए सदस्य निर्वाचित हुई तथा आपने राज्यमंत्री वित्त का दायित्व संभाला। दूसरी बार आप सन् 1980 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी की ही टिकट पर बैकुण्ठपुर निर्वाचन क्षेत्र से अविभाजित मध्यप्रदेश विधान सभा के लिए सदस्य निर्वाचित हुईं तथा आपने लघु सिंचाई मंत्री का दायित्व संभाला। आप सरगुजा रियासत की राजमाता थीं। साहित्य, फोटोग्राफी, संगीत व कृषि में आपकी विशेष अभिरूचि थी। आपका दीर्घकालीन राजनैतिक जीवन अपने क्षेत्र की आम जनता की समस्याओं के निराकरण तथा सेवा के लिए समर्पित रहा।

राजमाता जी ने अपने प्रयासों से सरगुजा क्षेत्र के समग्र विकास की आधारशिला रखी, जनमन और लोकजीवन में उनका आत्मीय अंतरंग और निकटता से इतना अधिक जुड़ाव था कि आमजन के मन में कहीं भी, कभी भी यह बात नहीं आई कि वे एक राजघराने से संबद्ध है, सादगी के साथ जनता से गहरा संबंध उन्हें अन्य लोगों से पृथक करता था, उन्हें विशिष्ट बनाता था। उनकी सहजता, सरलता मिलनसारिता अनुकरणीय है।

असंशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

राजमाता जी के निधन से मेरा अंतरमन आहत है, हमारे परिवार से उनका आत्मीय संबंध रहा। यह मेरा सौभाग्य रहा कि उनका वात्सल्य, प्रेम और स्नेह मुझे सदैव मिला। उनके सुपुत्र श्री टी.एस.सिंहदेव जी जो इस सभा के सदस्य हैं और राज्य शासन में पंचायत एवं स्वास्थ्य मंत्री छत्तीसगढ़ शासन का दायित्व निर्वहन कर रहे हैं, उनके मातृशोक की इस दुखद घड़ी में अपनी सादर संवेदना निवेदित करता हूँ, ईश्वर से मेरी प्रार्थना है कि उन्हें और उनके पारिवारिक जनों को इस अपार दुख को सहने की क्षमता प्रदान करें। मैं अपनी ओर से, अपने परिवार की ओर से और इस सदन की ओर से उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ, ईश्वर से प्रार्थना है कि मृतात्मा को दिव्य ज्योति में लीन करते हुए, उन्हें सद्गति प्रदान करने की कृपा करे।

आपके निधन से प्रदेश ने एक वरिष्ठ राजनीतिज्ञ, चिंतक तथा समाजसेवी को खो दिया है।

मुख्यमंत्री (श्री भूपेश बघेल) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, राजमाता श्रीमती देवेन्द्र कुमारी सिंहदेव के देहावसान से हम सब स्तब्ध हैं और शोकाकुल हैं। वे सिर्फ सरगुजा की ही राजपरिवार की माता नहीं थीं, बल्कि उनका स्नेह और उनकी ममता हम सब के लिए थी और पूरे प्रदेश के लिए थी। इसलिए उनका जाना ऐसे खाली स्थान छोड़ गया है जो कभी भरा नहीं जा सकता।

माननीय अध्यक्ष महोदय, राजमाता निश्चित तौर पर हिमाचल प्रदेश की राजपरिवार से लेकर सरगुजा परिवार, राजपरिवार तक उनका कार्यक्षेत्र रहा, लेकिन वे वहीं तक सीमित नहीं थीं, बल्कि वहां से निकलकर आमजनों के बीच और पूरे सरगुजा, छत्तीसगढ़ और मध्यप्रदेश के लोगों को अपना परिवार समझा और उसी प्रकार का वात्सल्य स्नेह सब को वह बांटती रही। माननीय अध्यक्ष महोदय, वह चाहतीं तो राजसी ठाठ से रह सकती थी, वह चाहती तो चूंकि उनके पति आई.ए.एस. अधिकारी थे और चीफ सेक्रेटरी के रूप में रिटायर्ड हुए, वे वहां उनके साथ सुखपूर्वक जीवन व्यतीत कर सकती थीं, लेकिन उन्होंने आम जनता से जुड़कर किसान मजदूर, आदिवासियों के बीच रहकर उनके सुख, दुख बांटने का काम करती रही।

माननीय अध्यक्ष महोदय, वे अविभाजित मध्यप्रदेश शासन में मंत्री थीं। लेकिन हम लोगों ने उन्हें एक संगठक के रूप में देखा। कांग्रेस संगठन को सरगुजा में गहरी जड़ें जमाने में और आज जो जड़ें गहरी हैं उसमें सबसे बड़ा योगदान राजमाता जी का है। आदरणीय अध्यक्ष महोदय, उनकी सहजता, सरलता, वात्स्लय और उनका आशीर्वाद हम सबको मिला है। उन्होंने अपने बच्चों को, परिवार को और समाज को जो संस्कार दिया है, उसके प्रतीक के रूप में हम लोग टी.एस.सिंहदेव जी को देख सकते हैं, जो हमारे साथ मंत्री हैं और संघर्ष के दिनों के साथी रहे हैं। उस समय भी उनका स्नेह और मार्गदर्शन हम लोगों को मिलता रहा है। उनके जाने से एक अपूरणीय क्षति छत्तीसगढ़ को हुई है। भले ही वह शारीरिक रूप से हमारे बीच नहीं हैं लेकिन उनके बताये हुए रास्ते, उनके विचार हमेशा हम लोगों के साथ रहेंगे। सिंहदेव परिवार के साथ लाखों परिवार उनके साथ जुड़े थे, मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि उनको

असंशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

दु:ख सहने की क्षमता प्रदान करे। साथ ही ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि उन्हें अपने चरणों में स्थान दें। अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करने हुए अपने दल की ओर से, पूरे प्रदेश की 2 करोड़ 80 लाख जनता की ओर से श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए अपनी वाणी को विराम देता हूं। धन्यवाद।

नेता प्रतिपक्ष (श्री धरमलाल कौशिक) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारे अविभाजित मध्यप्रदेश शासन की विधायक और मंत्री रहीं एक ममतामयी मॉ के रूप में राजमाता श्रीमती देवेन्द्र कुमारी सिंहदेव जी को हमने खोया है। उनके मातृत्व की विशालता का प्रभाव हम सबके जीवन में सदा के लिए रहेगा। उनके निधन से राजनीतिक और सामाजिक जीवन में जो शून्यता आई है, उसकी भरपाई कर पाना संभव नहीं है। वह राजनीतिक जीवन में शूचिता की प्रतीक के रूप में याद की जायेंगी। उनका दीर्घकालिक राजनीतिक व सामाजिक जीवन हम सबको मार्गदर्शित करता रहेगा। सन् 1972 और 1980 में अंबिकापुर, बैकुन्ठपुर से विधायक रहीं। अविभाजित मध्यप्रदेश की सरकार में वित्त, आवास व सिंचाई जैसे महत्वपूर्ण विभाग की मंत्री रहीं। उस समय अपने दायित्वों के निर्वहन में मुख्य रूप से किसानों को ले करके, आम नागरिक और गरीबों के प्रति उनकी मन की जो संवेदना रही है और उनके लिए उन्होंने जो जीवन में काम किये हैं। वास्तव में उनका ऐसे परिवार में जन्म हुआ था जहॉ शिमला के राजपरिवार से हमारे सरगुजा राजपरिवार में मुख्य सचिव के रूप में स्वर्गीय मदनेश्वर सरण सिंहदेव की अर्द्धागिंनी के रूप में आई थीं और साथ ही आज उनके पुत्र बाबा साहब हमारे स्वास्थ्य मंत्री के रूप में कार्य कर रहे हैं, यह निश्चित रूप से उनका स्नेह और संस्कार है। वह संगठनशील राजनीति में रहते हुए सदा छत्तीसगढ़ की प्रगति के लिए सतत प्रयास करतीं रहीं। उनके मार्गदर्शन में छत्तीसगढ़ में सिंचाई, कृषि जैसी महत्वूपर्ण योजनाओं का विस्तार हुआ और इस प्रदेश के कई महत्वपूर्ण कार्य हुए। उनके जीवन से जुड़े हुए कई प्रेरक प्रसंग हैं जो हम सभी को सामाजिक जीवन में कार्य करने के लिए सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करती रहेगी। उनसे पारिवारिक कार्यक्रमों में मिलने का अवसर भी प्राप्त हुआ और उनका स्नेह भी हम सब लोगों को मिला है। एक बार एक राजनीतिक आंदोलन के दौरान लाठीचार्ज होने से राजमाता जी को चोट भी आई, लेकिन अस्पताल जाने की बजाय वह सीधे जेल में गई और जो कार्यकर्ता हैं उनके मनोबल को ऊंचा करने के लिए कार्य किया। आज हम ऐसी राजमाता को याद कर रहे हैं जिनके जीवन की सादगी, समर्पण, शुचिता, समग्रता, सामाजिकता के प्रणेता के रूप में हर युग के बीच में एक करूणामयी मॉ मौजूद रहेगी। मातृशक्ति की प्रतीक स्वर्गीय राजमाता देवेन्द्र कुमारी सिंहदेव जी को मैं अपनी ओर से, अपने दल की ओर से उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। इसके साथ ही मैं भगवान से प्रार्थना करता हूं कि ऐसी पुण्यात्मा जीव को जो हमेशा दूसरों के जीवन में खुशियां आयें इसके लिये कार्य करती रहीं, भगवान उन्हें अपने चरणों में स्थान दें । साथ ही उनके परिवार को इस असहनीय दुख को सहने की शक्ति प्रदान करें । ओम शांति ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

डॉ. रमन सिंह (राजनांदगांव) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने स्वर्गीय राजमाता देवेन्द्र कुमारी सिंहदेव जी के बारे में जो अपनी भावना व्यक्त की, मैं उससे अपने आप को संबद्ध करता हूं । उनकी लोकप्रियता जिन्हें उस पूरे क्षेत्र के लोग, छत्तीसगढ़ और मध्यप्रदेश के अर्थात् पूरे देश के लोग उनका कितना सम्मान करते हैं, मैं जब उनकी श्रद्धांजलि सभा में उपस्थित हुआ तो मुझे इस बात का एहसास हुआ कि छत्तीसगढ़ प्रदेश की सीमा, मध्यप्रदेश की सीमा और पूरे देश के अलग-अलग हिस्सों से हजारों लोग वहां उपस्थित हुए थे । मैंने वहां सरगुजा के लोगों की आंखों से आंसू निकलते हुए देखा । उनका ममतामयी चेहरा, उनका व्यक्तित्व, उनकी सरलता, उनकी सादगी निश्चित रूप से उन्होंने अलग-अलग रूप में अपने आपको सफल साबित किया । उन्होंने एक मंत्री के रूप में अपनी भूमिका निभायी, संगठक के रूप में उन्होंने कार्यकर्ताओं को उत्साहित किया और निश्चित रूप से हम उस क्षण को याद करते हैं और आपने जो भावना व्यक्त की, मैं उस भावना से अपने आपको जोड़ते हुए उनके प्रति अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं ।

श्री अजय चंद्राकर (कुरूद) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं किन्हीं कारणों से अपने आपको क्षमा नहीं कर पाउंगा, मैंने माननीय को उस कारण से अवगत भी कराया । मैं आदरणीया राजमाता जी को श्रद्धांजलि देने के लिये 21 तारीख को सरगुजा जाने के लिये बाईरोड निकल रहा था लेकिन कुछ ऐसी घटना घटी कि मैं वहां जा नहीं पाया और जब 22 तारीख को उनकी तेरहवीं का कार्यक्रम हो रहा था तो मेरे परिवार में ही किसी का फ्यूनरल हो रहा था और मुझे इस बात की बहुत पीड़ा है। माननीय अध्यक्ष महोदय, राजमाता सिंधिया की जीवनी का नाम है राजपथ से जनपथ तक । वह एक ऐसी ममतामयी माता थीं, जिनका एक राजमाता की तरह ही उदाहरण मिलता है जिन्होंने ऐश्वर्य-आराम की जिंदगी अर्थात् एक सुविधापूर्ण जिंदगी छोड़कर जनता की सेवा का मार्ग चुना, वंचितों और गरीबों की सेवा का मार्ग चुना । सरगुजा को ही नहीं बल्कि पूरे छत्तीसगढ़ को उनकी उपस्थिति का लाभ मिला और दूसरे तौर पर उस दौर में बहुत सारी वर्जनाओं को तोड़ते हुए महाराजा साहब ने जो शासकीय सेवा का चयन किया, उन दोनों ने अपने-अपने क्षेत्र में छत्तीसगढ़ की एक बेमिसाल सेवा की और केवल अपनी भौतिक उन्नति के लिये ही कार्य नहीं किया बल्कि पीड़ित-वंचितों को उनकी क्षमता, उनकी योग्यता का लाभ मिले इसके लिये उन्होंने अपने जीवन को समर्पित किया । राजमाता जी का हमारे बीच में नहीं रहना एक परिवार की, एक राज्य की ही नहीं बल्कि राज्य और सार्वजनिक जीवन की बड़ी क्षति है, एक बड़ी शून्यता है । माननीय टी.एस. सिंहदेव साहब जी बहुत मजबूत और सक्षमआदमी हैं और उनका परिवार भी बहुत मजबूत है । भगवान उनको शक्ति देंगे और मैं इस घड़ी में अपनी कांस्टेंसी की ओर से, अपने परिवार की ओर से, अपने दल की ओर से अर्थात् सभी की ओर से माता जी के प्रति संवेदनाएं व्यक्त करता हूं और ऐसे निजी क्षणों में महाराजा सिंहदेव साहब, मंत्री जी के साथ खड़े हैं । वे एक

अप्रमाणित/असंशोधित के लिए नहीं

यशस्वी माता-पिता की एक यशस्वी संतान हैं । उनकी गौरवमयी परंपरा को हर क्षेत्र में हर क्षण आगे बढ़ायेंगे इस भावना के साथ मैं अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं ।

श्री मोहन मरकाम (कोंडागांव) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, राजमाता देवेन्द्र कुमारी सिंहदेव हमारे बीच नहीं रहीं । मैं अपने दल की ओर से उनको श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूं, श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं । अध्यक्ष महोदय, जब भी हम उनसे मिलने भोपाल या कहीं और जाते थे तो माता जी का हम सबको स्नेह, प्यार, मार्गदर्शन मिलता रहा है । आज उनके नहीं रहने से सरगुजा से लेकर बस्तर तक पूरा छत्तीसगढ़ स्तब्ध है । सभी लोग उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं । अध्यक्ष जी, उनके नहीं रहने से हम सबके साथ ही पूरे प्रदेश को अपूरणीय क्षति हुई है । मैं इस दुख की घड़ी में ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि सिंहदेव परिवार को दुख को सहने की शक्ति प्रदान करे । मैं अपने दल की ओर से और अपनी ओर से श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूं ।

श्री धर्मजीत सिंह (लोरमी) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, राजमाता जी के निधन से पूरे छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश को अपूरणीय क्षति हुई है । किसी की ज़िंदगी में लोकप्रियता का पता उसकी मौत के बाद पता चलता है । यह हम सब लोगों ने देखा कि राजमाता जी के निधन के समाचार के बाद से उनकी तेरहवीं तक पूरा सरगुजा, पूरा प्रदेश अंबिकापुर में उपस्थित था । मुझे याद है, हम लोग युवक कांग्रेस के कार्यकर्ता थे, राजमाता जी सेठी जी के मंत्रिमंडल में भी थीं, वे श्री अर्जुन सिंह जी के मंत्रिमंडल में भी थीं । उनका आवागमन अनूपपुर से होता था । वे भोपाल से अनूपपुर और अनूपपुर से अंबिकापुर आतीं थीं, उस समय ट्रेन की सुविधा नहीं थी । लेकिन उनको देखने और उनसे मिलने का सौभाग्य हम लोगों को बिलासपुर में मिला, जब वे बिलासपुर के कार्यक्रम में आती थीं । वे एक बहुत ही विदुषी, सौम्य, शिष्ट राजनेता के रूप में उनकी पहचान थी और वे राजसी सुख-सुविधाओं की हक़दार तो थीं लेकिन उन्होंने आम लोगों के लिए अपने दरवाजे खोले और इसीलिए हज़ारों ऐसे लोग मिलते हैं जो राजमाता और महाराजा साहब से अपनी तकलीफें बताकर, भोपाल में अपनी समस्याओं का निराकरण कराते रहे हैं । इसीलिए जब सरगुजा में राजमाता जी का निधन हुए तो देश के बड़े-बड़े राजा-महाराजा भी वहां उपस्थित हुए । वहीं सरगुजा की झोपड़ी में रहने वाला व्यक्ति भी ऐसा मानकर कि उनकी मां का निधन हो गया, व्यथित होकर सरगुजा के कोठी घर के सामने उपस्थित हुआ । यही लोकप्रियता ज़िंदगी में किसी इंसान की सही लोकप्रियता होती है । इंसान चाहे कितना भी बड़ा हो, चाहे उसके पास कितनी भी दौलत हो । चाहे वह राजा हो, महाराजा हो, नेता हो अगर उसकी मौत के बाद उसकी उसकी अंत्येष्टि में लोग न उमड़ें, तो समझता कि वह सबसे ग़रीब आदमी है । इसीलिए मैं यह कह सकता हूं कि राजमाता लोगों के दिलों में राज करती थीं और उस अंचल में कोरिया, सरगुजा, बलरामपुर आदि-आदि क्षेत्रों में उन्होंने अपनी तपस्या से कांग्रेस पार्टी को मजबूती दी है और उन्हीं के पद-चिन्हों पर चलते हुए श्री टी.एस.सिंहदेव भी वहां पर काम कर रहे हैं और अध्यक्ष महोदय, मैंने खुद देखा कि आम आदमी गांव

अप्रकाशित/असंशोधित के लिए नहीं

का छोटे से छोटा आदमी भी अपने महाराजा टी.एस.सिंहदेव से मिलकर उन्हें सांत्वना और ढांढस बंधा रहा था । यह राजमाता के प्रति आम लोगों का सम्मान है । उनके निधन से बहुत बड़ी क्षति हुई है। इस क्षति की पूर्ति होना संभव नहीं है लेकिन मैं ईश्वर से यही प्रार्थना करता हूं कि राजामाता की आत्मा को अपने चरणों में स्थान दे और उनके परिवार को इस दुख को सहने की शक्ति दे । मैं उन्हें प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं ।

श्री केशव प्रसाद चन्द्रा (जैजैपुर) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, राजमाता श्रीमती देवेन्द्र कुमारी सिंहदेव जी हमारे बीच नहीं रहीं । राजमाता होकर भी तमाम सुख-सुविधाओं को छोड़कर उन्होंने समाज सेवा का क्षेत्र चुना । वे अविभाजित मध्यप्रदेश में मंत्री भी रहीं । उनका जाना केवल उस परिवार के लिए ही नहीं, बल्कि छत्तीसगढ़ और मध्यप्रदेश के लिए भी अपूरणीय क्षति है । ऐसे अवसर पर मैं अपने दल की ओर से, इस सदन की ओर से श्रद्धासुमन अर्पित करता हूं, धन्यवाद् ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल (रायपुर नगर दक्षिण) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, श्रीमती देवेन्द्र कुमारी सिंहदेव जी, जिनको पूरा सरगुजा राजमाता के रूप में जानता था, मानता था, पहचानता था । राजे-रजवाड़ों की समाप्ति के इतने साल बाद भी राजमाता के रूप में उनका सम्मान होना इस बात को प्रदर्शित करता है किस प्रकार से उन्होंने जनता की सेवा की । वे विधायक रहीं, मंत्री रहीं, उनके पति चीफ़ सेक्रेटरी रहे । प्रशासनिक सेवा के सबसे बड़े अधिकारी रहे, हम लोगों ने उनको देखा है । शायद देश में राजमाता के रूप में सिंधिया राजमाता को जाना गया और ऐसा सम्मान अगर किसी को मिलता है तो उससे लगता है कि वह राजमहलों की दीवारों से बाहर निकलकर आम जनता के लिए कैसे लोकप्रिय हुईं और उनके सुपुत्र टी.एस.सिंहदेव साहब हम सबके बीच में हैं और सबके साथ में हैं। हम लोग देखते थे कि उन्होंने नेता प्रतिपक्ष के रूप में कितनी सेवा की ? आज विधान सभा चल रही है। आज दिल्ली जा रहे हैं। सुबह-शाम को आ रहे हैं और रात को जा रहे हैं। उन्होंने एक पुत्र का भी फर्ज बखूबी से निभाया। हम सब टी.एस. सिंहदेव साहब की सरलता, सादगी, सौम्यता देखते हैं और ये गुण मिलते हैं तो माता से ही मिलते हैं। ऐसी राजमाता को जिनको पूरा छत्तीसगढ़, पूरा मध्यप्रदेश जानता है। हम लोग उनके तेरहवीं के दिन गये थे। हम लोगों ने उस दिन देखा कि मध्यप्रदेश के हमारे पुराने मित्र, राजस्थान के पुराने मित्र, यू.पी. से बिहार से सब लोगों ने वहां आकर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। राजमाता जी ऐसी लोकप्रिय थीं। उनके सुपुत्र टी.एस.सिंहदेव साहब हैं और उनके लिए यह गौरव की बात है कि वे ऐसी राजमाता के पुत्र हैं। जिस माता का पूरा देश सम्मान करता है, आज हम उनके प्रति अपनी श्रद्धा-सुमन अर्पित करते हैं। टी.एस.सिंहदेव साहब उनके रास्ते पर चलकर इस प्रदेश और देश की सेवा करते रहें, यही हम प्रभु से कामना करते हैं। ओम शांति।

अध्यक्ष महोदय :- अमरजीत जी।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

खाद्य मंत्री (श्री अमरजीत भगत) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, राजमाता श्रीमती देवेन्द्र कुमारी सिंहदेव जो मध्यप्रदेश अविभाजित राज्य की पूर्व मंत्री रहीं और हमारे सरगुजा के लिए तो माता के रूप में रहीं। राजमाता एक अभिभावक के रूप में, एक माता के रूप में, एक कुशल नेता के रूप में सभी को साथ लेकर चलने का उनमें मादा था व सभी के प्रति उनका प्रेम और आशीर्वाद था। उनके जाने से आज पूरा सरगुजा शोकाकुल है और उनके जाने के बाद जो शून्यता की स्थिति बनी है, उसकी भरपाई करना असंभव है। माननीय अध्यक्ष महोदय, गरीबों के प्रति उनका जो स्नेह था, उनका जो प्रेम था कि कोई भी भोपाल में उनके पास पहुंच जाता था। चाहे वह किसी भी दल का हो, उनसे एक मुखिया के रूप में जिस प्रकार से उनका प्रेम मिलता था, वह हमेशा लोगों के जहन में रहेगा। एक राज परिवार के इतने ऊंचे ओहदे पर होने के बाद भी एक राजनेता के रूप में उनकी छवि थी। उनका लोगों के प्रति प्रेम और लोगों के प्रति लगाव था। कोई भी समस्या कहीं हो जाये तो उनको ढांढस देना, उनको साहस देना, उनकी समस्याओं का समाधान करने जैसे सहज भाव उनमें देखने को मिलती थी। माननीय अध्यक्ष महोदय, एक घटना के बारे में याद दिलाऊंगा। बीजापुरा में कुछ आदिवासियों की भूख से मौत की घटना हुई थी, उस समय सी.एम. और पी.एम. दोनों का वहां दौरा हुआ था। माननीय मोतीलाल वोरा जी वहां गये थे, उनको लेकर मैं विश्रामपुर एस.ई.सी.एल. गेस्ट हाउस में रूकवाया था और उसके बाद साथ लेकर गया तो वहां आगे राजमाता मिलीं और उनको आरमाडा गाड़ी में बैठाकर वहां से ले गया। जिस प्रकार से इतने ऊंचे ओहदे पर होने के बाद भी लोगों के साथ जमीन में बैठना, उनके बारे में पूछना और एक-एक लोगों से जिस प्रकार से उनका संपर्क था, वह आज भी हम लोगों के जहन में है। उनके एक अच्छे राजनेता के रूप में, एक ममतामयी माता के रूप में गरीबों के प्रति उनका जो प्रेम था, उनके मसीहा के रूप में हमेशा लोगों के जहन में वे रहेंगी। उनके उत्तराधिकारी के रूप में माननीय टी.एस. बाबा साहब हैं, जो उस क्षेत्र में लोगों को जोड़कर रखे हैं। हम सब उनके प्रति अपनी सद्भावना ज्ञापित करते हैं और हम शोकाकुल हैं। ईश्वर उन्हें इस दुख को सहने की शक्ति प्रदान करें। हम सब टी.एस.सिंहदेव साहब के साथ और उनके परिवार के साथ हैं। ईश्वर उनकी आत्मा को शांति प्रदान करें, यही ईश्वर से प्रार्थना है। ओम शांति।

अध्यक्ष महोदय :- अरूण वोरा जी।

श्री अरूण वोरा (दुर्ग शहर) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, राजमाता श्रीमती देवेन्द्र कुमारी सिंहदेव जी के निधन से हम सब शोकाकुल हैं। अविभाजित मध्यप्रदेश में वे कई बार मंत्री रहीं, विधायक रहीं। उनके निधन से हमने एक कुशल जननेता को खो दिया है और हम नहीं समझते हैं कि जिसकी पूर्ति आने वाले समय में की जा सकेगी। संसदीय व प्रशासनिक क्षेत्र में अद्वितीय क्षमता हासिल की थी। मध्यप्रदेश में श्री प्रकाशचंद सेठी जी, श्री अर्जुन सिंह जी एवं श्री मोती लाल वोरा जी के मंत्रिमण्डल में रहकर उन्होंने अपने एक अमिट छाप छोड़ी है, वह हमेशा अविस्मरणीय रहेगी। हम सन् 1972 से उनका

अशांकित/असंशोधित के लिए नहीं

नाम सुनते रहे हैं। मैं बाबा साहब का बहुत आभार मानता हूं कि माता-पिता की कैसे सेवा की जा सकती है, माता-पिता ऋण जीवन में कभी भी नहीं चुकाया जा सकता है, बाबा साहब एक पुत्र होने के नाते इस बात को उन्होंने साबित किया है। मैं समझता हूं कि जो माता-पिता का सम्मान करते हैं, उनको आगे बढ़ने से कोई नहीं रोक सकता है। यह प्रदेश के पुत्रों के लिए प्रेरणा है। इस बात की प्रेरणा जब-जब हम आपको देखेंगे, हमको मिलती रहेगी। मैं उनके श्रीचरणों में नमन करते हुए अपनी बात को समाप्त करता हूं। धन्यवाद।

श्री शैलेश पाण्डेय (बिलासपुर) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं जब कांग्रेस पार्टी में आया तो मुझे बाबा साहब के साथ रहने का अवसर मिला। उन्होंने मुझे एक छोटे भाई की तरह स्नेह भी दिया, आशीर्वाद भी दिया, मार्गदर्शन दिया और इस कारण मुझे राजमाता को जानने का अवसर भी मिला। मुझे उनसे मिलने का अवसर भी मिला। उनके निधन पर हम लोग सरगुजा पहुंचे। मैंने देखा कि वहां सरगुजा की जो जनता है, वह उनको कितना प्यार करती है। राजमाता कई साल से, लगभग दो-ढाई साल से बीमार थीं और दिल्ली में उनका ईलाज चल रहा था। वहां की जनता थी, वहां की जो प्रजा थी, वे उनसे बहुत लगाव रखती थी। हमारे आदरणीय बाबा साहब भी एक अच्छे पुत्र के नाते उनसे जिस प्रकार बात करते थे, मैंने बाबा साहब को उनसे सामने बात करते हुए देखा। आज बाबा साहब भी हमारे प्रदेश के मंत्री हैं और जब भी वे अपनी माता से बात करते थे, तो ऐसा लगता था कि जैसे एक छोटा बालक अपनी माता से बात करता है, इतना सम्मान, इतना आज्ञा का पालन बाबा साहब को करते हुए देखा। जब तेरहवीं हुई तो मैं वहां पर था। मैंने देखा कि वहां की एक-एक जनता रोते हुए घण्टों लाईन में लगकर राजमाता को श्रद्धांजलि देने के लिए आये थे। आज उनके निधन से हम सब लोग बहुत दु:खी हैं। अध्यक्ष महोदय, आप भी उस दिन वहां थे। आपने भी देखा कि वहां की जनता किस प्रकार से उनको प्यार करती थीं। वह एक अच्छी माता थीं और एक राजमाता भी थीं। हमारे प्रदेश में, हमारे देश में इस प्रकार की माताओं से सभी महिलाओं को प्रेरणा लेनी चाहिए। मैं समझता हूं कि एक अच्छे पुत्र का धर्म हमारे आदरणीय बाबा साहब ने निभाया। एक अच्छे पुत्र का धर्म क्या होता है, यह भी हमें आदरणीय बाबा साहब से प्रेरणा लेनी चाहिए। मैं आज इस अवसर पर स्वर्गीय राजमाता को विन्रम श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता हूं कि वे उनको अपने चरणों में स्थान दे। ओम शांति।

श्री अजीत जोगी (मरवाही) :- अध्यक्ष महोदय, अश्रुपूरित श्रद्धांजलि देना चाहता हूं। ऐसी महान विभूति, महान महिला को, जिसके साथ मुझे व्यक्तिगत रूप से कम से कम 30-35 वर्ष तक काम करने का अवसर मिला। हम लोग एक ही पार्टी में थे। पार्टी में गुट होते हैं। हम एक ही गुट में थे। मिलकर चलते थे। उनमें सबसे बड़ी खासियत जो मुझे लगती थी, वह उनकी सहृदयता थी। वह हृदय से इतनी कोमल थीं कि छोटी-छोटी बातों में आत्म विभोर हो जाती थीं। गरीबों की मदद करना तो उस परिवार का

अशोधित/अप्रकाशन के लिए नहीं

सदैव से काम रहा है। वे दूसरे प्रदेश से यहां आई थीं, पद हमारे प्रदेश में ऐसी घूल-मिल गईं । सरगुजा की भाषा, सरगुजा के लोगों से उन्हीं के स्तर पर उतरकर बात करना उनकी बहुत बड़ी खासियत थी । मैं उनसे सैकड़ों-हजारों बार मिला होऊंगा । वे हम लोगों से ऐसा बात करती थीं कि हमें महसूस ही नहीं होता था कि हम अपने से बड़े परिवार के और अपने से बड़े नेता से बात कर रहे हैं। इस परिवार से जैसा आदरणीय मंत्री जी जानते हैं, उनके पिता जी मुझे बहुत प्रेम करते थे, जब मैं आई.ए.एस. में था तो मुझे उन्होंने, माता-पिता दोनों ने मुझे इस तरह से प्यार किया कि मुझे उनके कारण कभी लूप लाईन की पोस्टिंग नहीं मिली । मैं सदैव अपने जीवन पर्यन्त कलेक्टर ही रहा और उसमें आदरणीय टी. एस. सिंहदेव जी की माता और पिता दोनों का आशीर्वाद मुझे मिला, मैं उसे कभी नहीं भूल सकता हूं । उनके बारे में कहने को बहुत कुछ है, पर बहुत लोग बोलना चाहते हैं । मैं उनके बारे में बोलता हूं तो भावातिरेक हो जाता हूं और मुझे न जाने कितनी घटनाएं याद आती हैं, जब उन्होंने Out of the way जाकर राजनैतिक रूप से, प्रशासनिक रूप से मदद की । मैं आपके साथ, पूरे सदन के साथ मिलकर उनको श्रद्धांजलि देना चाहता हूं । आशा करता हूं कि उन्होंने जो मार्ग हम लोगों को दिखाया है, केवल उनका परिवार उस मार्ग पर न चले, हम सब लोग चलें और यह सबक उनसे सीखें कि चाहे व्यक्ति कितने बड़े परिवार का हो, कितना धनाड्य हो, कितना समृद्ध हो, पर उसका सबसे बड़ा गुण उसकी सौम्यता होती है, उसका सद्व्यवहार रहता है, उनका विचार रहता है और उसी रास्ते पर हम सब चलें तो उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी । मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि श्री टी. एस. सिंहदेव को, उनके पूरे परिवार को, आशा सिंह जी को और उनके परिवार को इस अपार दु:ख को सहन करने की उन्हें शक्ति मिले और मृतात्मा को तो शांति मिलेगी ही, मुक्ति मिलेगी ही क्योंकि मेरे जानते में उन्होंने कभी कोई गलत कदम नहीं उठाया, कोई गलत बात नहीं की । मुंह से भी कभी किसी को अपशब्द नहीं कहे, ऐसी महान महिला को श्रद्धांजलि देते हुए मैं अपने शब्दों को विराम देता हूं ।

श्रीमती अम्बिका सिंहदेव (बैकुन्ठपुर) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, राजमाता साहिबा हमारे बैकुन्ठपुर विधान सभा की प्रथम महिला विधायक थीं। पूरे क्षेत्र में आज भी लोग उनको राजमाता सहिबा के नाम से नहीं, पर महारानी साहिबा के नाम से आज भी उनको याद करते हैं । उनके नेतृत्व में पूरे कोरिया जिले में बहुत कुछ ऐसे काम हुए, जिसका असर आजतक हमारे क्षेत्र में दिखाई देता है । पूरे क्षेत्र में हम जितने लोग जनसेवा कर रहे हैं, हम सब के लिए उन्होंने जो टारगेट सेट किया है, उसको पूरा करना, उस तक पहुंचना तो हम में से किसी के लिए शायद संभव नहीं हो पाएगा । ईश्वर से उनकी आत्मा की शांति की प्रार्थना करते हुए, उनसे यह भी प्रार्थना करना चाहूंगी कि उनका आर्शीवाद हम सब को हमेंशा मिलता रहे और उन्होंने जो मार्ग दिखाया है, उस पर चलने की पूरे क्षेत्र के लोगों को हमेंशा शक्ति मिलती रहे । प्रणाम ।

अध्यक्ष महोदय :- श्री रामकुमार यादव ।

श्री रामकुमार यादव (चंद्रपुर) :- धन्यवाद, अध्यक्ष महोदय जी । आज मैं ऐसे राजमाता के श्रद्धांजलि के लिए खड़े हंव, कहने वाला कहे हे कि कोन कतका दिन जीथे, यह महत्वपूर्ण बात नो हे, बल्कि अपन जीवन में वोहा का करथे, यह महत्वपूर्ण बात होथे । यह भी कहे हे कि कोई राजा घर में जनम ले ले राजा नइ होय, गरीब, किसान मजदूर के दिल में राज करने वाला राजा अऊ महारानी होथे । अऊ वोहा सिद्ध करके दिखा दिस, हम तो छोटे रहेन तो सुने रेहेन, "जैसने-जैसने घर कुरिया, तैसने-तैसने फईका, जैसने-जैसने दई-ददा, तैसने-तैसने लईका ।" आज जिस प्रकार से महारानी के कोख ले हमर टी.एस.सिंहदेव बाबा जी जन्म ले हवे, यह हमर प्रदेश के लिए सौभाग्य के बात हे । मैं एक गरीब परिवार के हंव, अंतिम छोर के व्यक्ति अंव, अऊ हमर प्रदेश के महारानी के लिए सही म खड़ा होयके बोले के मोला मौका दे हव, ओखर लिये मैं आप ल भी धन्यवाद देथंव । मैं परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करिहंव, हमर दई ला अपन चरण में स्थान देवय अऊ वोखर आत्मा ला शांति प्रदान करै । ऊँ. शान्ति, ऊँ. शान्ति, ऊँ. शान्ति ।

अध्यक्ष महोदय :- डॉ.प्रेमसाय सिंह टेकाम ।

स्कूल शिक्षा मंत्री (डॉ.प्रेमसाय सिंह टेकाम) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, राजमाता जी का निधन हुआ । हम सब आज श्रद्धासुमन अर्पित कर रहे हैं, राजमाता जी का जन्म जुबल स्टेट में हुआ और वहां से सरगुजा आई और सब सुख छोड़कर उन्होंने जनसेवा में अपने आप को समर्पित किया और वह बेहद सरल, सौम्य, रूप में काम करती थी । मैं भी उनके विधान सभा क्षेत्र से चुनाव लड़ा । जब मैं वहां पर गया, तब लोग बोलते थे कि राजमाता जी इतने सहज हैं, उस समय गांव में कुर्सियां नहीं होती थी तो खटिया और चटिया होती थी, वह कहती थी कि खटिया में नहीं, चटिया में लोगों से बैठकर बात करेंगे और बेहद प्रभावशाली ढंग से लोगों को आकर्षित करने की उसमें क्षमता थी । वे मंत्री रहीं, विधायक रहीं, सिंचाई विभाग, आवास एवं पर्यावरण, वित्त राज्य मंत्री रहीं, सरगुजा जिले के लिए उन्होंने अनेक काम किये और संगठन की उनमें अद्भुत क्षमता थी । सरगुजा जिले में कांग्रेस का जो आज संगठन है, उन्होंने उसको आगे बढ़ाया और एक-एक व्यक्ति से उनके संबंध थे और यह महसूस करते थे कि मेरे परिवार से है । हम लोग तो उनके परिवार के रहे हैं । हम लोगों को भी वह पुत्रवत मानती थी, स्नेह करती थी । आज उनकी इस दु:ख की घड़ी में हम सब टी.एस.बाबा के साथ हैं और उनको श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं । एक ऐसी राजमाता, जो राजनेता ही नहीं, एक माँ खोया है, धन्यवाद ।

अध्यक्ष महोदय :- श्री ताम्रध्वज साहू ।

गृह मंत्री (श्री ताम्रध्वज साहू) :- सम्माननीय अध्यक्ष महोदय, राजमाता देवेन्द्र कुमारी सिंहदेव के निधन का उल्लेख करते हुये उनके विषय में जिन बातों का उल्लेख किया और पूर्ववक्ताओं ने जो बातें रखीं, उन सबसे अपने आप को जोड़ते हुये इतना ही कहना चाहूंगा कि विधि का विधान है, जो आया है, उसको एक दिन जाना पड़ता है । पर, कुछ लोग ऐसे होते हैं, जो जीवन में काम करते हैं, उससे इस

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

दुनिया में अपना अमिट छाप छोड़ देते हैं । शुरूआती दौर में राजमाता को जब हम दूर से देखते थे, कोई कार्यक्रम में उनका आना-जाना होता था या भोपाल में कहीं मिलने गये हैं, वह आ जाती थीं, या कहीं बैठक-वैठक में, भेंट हो जाता था तो हम लोग देखते थे और अनुभव भी करते थे कि संस्कार, मर्यादा से भरा उनका जीवन और व्यक्तित्व था, ममता कूट-कूट कर भरी हुई थी, जब वह बात करती थीं तो इतना धीरे, इतना सरल, सहज कोई उँची आवाज या तेज गति से बात कर रही हों, ऐसा भी नहीं था। उनका पारिवारिक माहौल वह मेदांता में लंबे समय तक भर्ती रहीं। बीच में हम लोग देखने भी गए थे। जिस दिन उनका देहावसान हुआ, मैं भी दिल्ली में था, माननीय मुख्यमंत्री जी का फोन आया कि राजमाता का निधन हो गया है मैं जा रहा हूं तो मैं भी तत्काल निकला और माननीय मुख्यमंत्री जी दर्शन करके, प्रणाम करके निकले उसके बाद मैं पहुंचा। मैं भी मेदांता हॉस्पिटल में ही प्रणाम किया, उनके दर्शन किया। राजनीतिक, सामाजिक और पारिवारिक इन तीनों क्षेत्रों में उनका दखल रहा और इन तीनों ही क्षेत्रों में उन्होंने अपना काम करके दिखाया। इसे उनकी सबसे बड़ी उपलब्धि कह सकते हैं। आदरणीय अध्यक्ष महोदय, मैं ईश्वर से कामना करता हूं कि उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करें, परिवार को दुख सहने की क्षमता प्रदान करें। कई बार यहां मीटिंग होती थी तो टी.एस. बाबा दिल्ली में होते थे, हम लोग सोचते थे वह तो दिल्ली में हैं, नहीं आयेंगे पर वह फ्लाईट पकड़कर मीटिंग के लिए आ जाते थे और मीटिंग खत्म होने पर फिर चले जाते थे। सेवा का अद्भुत उदाहरण टी.एस.बाबा ने पेश किया। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि पूरे परिवार को दुख सहने की क्षमता प्रदान करें। मैं उन्हें अपनी श्रद्धा-सुमन अर्पित करता हूं, धन्यवाद।

श्री शिवरतन शर्मा (भाटापारा) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, कबीर साहब ने कहा है कि

कबिरा जब हम पैदा हुए जग हंसे हम रोय,
करनी ऐसी कर चलो हम हंसे जग रोय।

राजमाता देवेन्द्र कुमारी सिंहदेव जी ने अपने जीवन में कबीर साहब के इस दोहे को चरितार्थ किया है। सन् 1947 में जब सारी रियासतों का भारत में विलय हुआ तो बहुत से राजपरिवार ऐसे थे जो अपने आपको नई परिस्थितियों में एडजस्ट नहीं कर पा रहे थे, पर सरगुजा राजपरिवार ने सेवा के मार्ग को चुना। राजमाता जी ने जनप्रतिनिधि के रूप में उस क्षेत्र के विकास के लिए अपनी सेवाएं दीं और हम सबके बीच आदरणीय सिंहदेव साहब मंत्री के रूप में उपस्थित हैं और मॉ से उनका कितना अटैचमेंट रहा है इसका एक उदाहरण, सदन में एक घटना घटी थी उसका मैं उल्लेख करूंगा। एक किसी विषय पर चर्चा हो रही थी और चर्चा में माननीय अमरजीत भगत ने जो एक बात कही, मैंने उस धरने का उल्लेख करते हुए राजमाता जी के नाम का उल्लेख किया था और टी.एस.सिंहदेव साहब इतने आहत हुए थे कि उन्होंने इस्तीफे तक की घोषणा कर दी थी। बाद में मैंने इसके लिए उनसे माफी मांगी थी। ये उनके माता के प्रति लगाव को प्रदर्शित करता है। पर ये तय है कि मॉ की कमी जीवन में कभी कोई पूरी नहीं कर

सकता। मैं राजमाता देवेन्द्र कुमारी सिंहदेव को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। प्रभु उन्हें अपने श्रीचरणों में स्थान दे, धन्यवाद।

वन मंत्री (श्री मोहम्मद अकबर) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, राजमाता श्रीमती देवेन्द्र कुमारी सिंहदेव जी का निधन न केवल सरगुजा बल्कि पूरे छत्तीसगढ़ के लिए अपूरणीय क्षति है। ये उनमें से हैं जिनके जाने के बाद वर्षों तक जिनको याद किया जाता है और जिन्हें इतिहास के पन्नों में भी प्रमुखता से स्थान दिया जाता है। मैं उन्हें अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

श्री विकास उपाध्याय (रायपुर नगर (पश्चिम)) :- अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे राजमाता श्रीमती देवेन्द्र कुमारी सिंहदेव जी के लिए श्रद्धांजलि देने का अवसर दिया इसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूं। एक ऐसा व्यक्तित्व जो प्रशासनिक सेवा में सबसे सर्वोच्च पद पर बैठने वाले की धर्मपत्नि, एक ऐसा सरल व्यक्तित्व, एक राजघराने की महारानी और उसके बाद जनप्रतिनिधि, जनता के साथ उनका सीधा जुड़ाव था। मुझे उनकी अंतिम यात्रा में जाने का अवसर मिला। वहां जो जीवंत उदाहरण देखने को मिला, कई लोग ऐसे मिले जिन्होंने उनका हाथ पकड़कर चलना सीखा, काम करना सीखा। पूरे सरगुजा का माहौल गमगीन था, दुकानें और व्यापार बंद थे। ये सही में एक ऐसे व्यक्तित्व के लिए हो सकता है, जो अपने लिये एक अनूठी पहचान छोड़कर गयी। सबकी मदद करना, सबके साथ में चलना, इतनी सरलता। अध्यक्ष महोदय, मैंने छात्र राजनीति से अपनी राजनीतिक जीवन की शुरूआत की है। सरगुजा जाने का अवसर मिला, उस समय उनकी बात करने की शैली, उनकी सौम्यता देखकर बहुत कुछ सीखने का मौका मिला और उनको देखकर ऐसा भी लगता था कि खाली उनके दो पुत्र नहीं हैं, राजमाता के नाम पर पूरा सरगुजा या उस क्षेत्र में रहने वाला हर व्यक्ति उस दुख की यात्रा में शामिल था, गमगीन था और अपनी बात को कह नहीं पा रहा था। माता का जाना तो अपने आपमें एक बहुत बड़ी क्षति होती है। जो चलना सीखाती है, आगे बढ़ना सीखाती है, टी.एस. बाबा और पूरे परिवार को तो बहुत बड़ी क्षति है। साथ-साथ में पूरे सरगुजा को पूरे प्रदेश को एक ऐसे व्यक्तित्व को जानने का पूरा जीवन परिचय को समझने का मौका मिला जिसने कई लोगों को आगे बढ़ाना सीखाया है। मैं अपनी तरफ से उनको सच्ची श्रद्धांजलि देता हूं। बहुत बहुत धन्यवाद।

अध्यक्ष महोदय :- आदरणीय धनेन्द्र साहू जी।

श्री धनेन्द्र साहू (अभनपुर) :- अध्यक्ष महोदय, राजमाता का निधन सिर्फ उनके परिवार के लिये ही क्षति नहीं हम सबके लिये क्षति है। पूरे प्रदेश की जनता के लिये और विशेषकर पूरे सरगुजा संभाग में उनके प्रति जो स्नेह था। अंत्येष्टि के दिन जो अपार भीड़ और पूरे सरगुजा में जिस तरह से पूरे का पूरा सरगुजा शोकाकुल था, उनकी लोकप्रियता को साबित करती है और एक त्याग के प्रति मूर्ति थी, विनम्रता, सहजता, सौम्यता ये सारे गुण उनमें कूट-कूट करके भरे थे। मुझे भी उनके सानिध्य में अवसर मिला था, उनसे रूबरू मुलाकातें हुई। ऐसा लगता था कि जो भी व्यक्ति उनसे एक बार मिल ले तो प्रभावित हुए

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

बिना नहीं रह सकते थे। इतनी वात्सल्यता उनके व्यवहार में, उनकी बातों में हमेशा छिपी हुई रहती थी। ऐसी ममतामयी राजमाता का निधन हम सबकी अपूरणीय क्षति है। उनके प्रति मैं अपनी श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूं।

अध्यक्ष महोदय :- आदरणीय डहरिया जी।

नगरीय प्रशासन मंत्री (डॉ. शिवकुमार डहरिया) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, राजमाता जी हमारे राजनीतिक क्षेत्र एवं सामाजिक क्षेत्र के क्षितिज में एक चमकते सितारे की तरह थी और उनका अस्त हो जाना हम सबके लिये, हमारी पार्टी के लिये, हमारे प्रदेश के लिये जो अपूरणीय क्षति है उसको पूरा किया जाना संभव नहीं है। सन् 2000 में जब नया राज्य बना था तो वे जिला कांग्रेस कमेटी की अध्यक्ष रहीं, उसके बाद प्रदेश कांग्रेस के उपाध्यक्ष रहीं, उनके साथ हम लोगों को काम करने का अवसर मिला। उन्होंने बहुत सारी जो बातें बताई, आज भी हम लोगों को याद है। उन्होंने एक बात यह भी कही थी कि हमारे घर में जो विवाद है, उसको बाहर नहीं ले जाना चाहिए। उनको अपने परिवार के बीच में ही बैठकर सब मिलकर निपटा लें। यह सबसे बड़ी बात परिवार के लिये होती है। यह उन्होंने हम लोगों को सिखाया था। मैं उनको श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूं, ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि उनके परिवार को इस दुख की घड़ी को सहन करने की शक्ति दे और उनकी आत्मा को शांति दे।

अध्यक्ष महोदय :- श्री सौरभ सिंह जी।

श्री सौरभ सिंह (अकलतरा) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, राजमाता देवेन्द्र कुमारी देवी जी की निधन पर शोक प्रकट करने के लिये खड़ा हुआ हूं। एक चीज की आप परिकल्पना करिए कि 1949 में शिमला की पढ़ी हुई कोई राजपरिवार की, जुब्बल परिवार के राजपरिवार की वह महारानी थी। वहां की लड़की थी। उनके यहां सरगुजा में शादी होती है और सरगुजा में शादी होने के बाद 1950 के दशक का सरगुजा, जहां पर रोड की व्यवस्था नहीं, बाकी चीजों की व्यवस्था नहीं, वहां पर वह आयीं। कितना बड़ा लैंग्वेज का बेरियर रहा होगा, कितना बड़ा कल्चर का बेरियर रहा होगा, जिस बेरियर से वह यहां पर आयीं। यहां पर आने के बाद भोग, विलास और सुख की जिंदगी को वह अपना सकती थी। चीफ सेक्रेटरी, आई.ए.एस. ऑफिसर की वाईफ थी करके और उसको छोड़कर सरगुजा की आम जनता की सेवा करना, उनके साथ मिलना और चलना और उन सारी बेरियर्स जो लाईफ के थे, उनको आगे पार कर, उनके साथ रहना, उनको चलना और उसके बाद एक आगे के मुकाम में चलना। आज टी.एस. सिंहदेव साहब हमारे बीच में है। वे जिस परिपाटी को आगे बढा रहे हैं। उनके साथ-साथ उनकी बहन जो हिमाचल प्रदेश में इस परिपाटी को आशा कुमारी जी आगे बढ़ा रही हैं। वह परिपाटी जो आज चल रही है, सरगुजा राजपरिवार की परिपाटी चल रही है, उसको उन्होंने आगे बढ़ाया। मैं उनको सबसे बड़ी श्रद्धांजलि देना चाहता हूँ कि उस परिस्थितियों में जो सरगुजा था, आज उन्होंने उस सरगुजा को आगे ले जाने के लिए काम किया। उन्होंने अपनी जिंदगी के उस चैलेंज को स्वीकार किया, उसको आगे बढ़ाया। आज जो हम

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

सरगुजा का स्वरूप देख रहे हैं, आप हम, सब लोग जो सरगुजा गये और जो हमने सरगुजा को देखा, सरगुजा के विकास में उनका योगदान है, उसके लिए मैं उनको बहुत-बहुत श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

कृषि मंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माता का स्थान तो धरती में ईश्वर से ऊपर माना जाता है और लगभग 45 सालों से हम लोग सरगुजा जा रहे हैं। वर्ष 1977-78 में हम लोगों ने छात्र राजनीति से शुरूआत की थी, तब से सरगुजा आना-जाना हो रहा है और राजपरिवार से महाराज साहब से हमारे रिश्ते बने हुए हैं। सौभाग्य से अविभाजित मध्यप्रदेश की विधान सभा में भी राज माता के साथ में काम करने का अवसर मिला। आदरणीय अर्जुन सिंह जी, दिग्विविजय सिंह जी और माननीय वोरा जी जब चीफ मिनिस्टर थे। लगभग 20 से 25 सालों मध्यप्रदेश की राजनीति में अगर कोई भी निर्णय हुआ करता था तो हम लोग ये मानकर चलते थे कि उसमें सरगुजा पैलेस की सलाह महत्वपूर्ण हुआ करती थी।

माननीय अध्यक्ष महोदय, दिल्ली की बैठक में हम और भाई नंदकुमार पटेल जी एक बार आदरणीय सोनिया गांधी जी के पास बैठे थे। किसी मुद्दे पर चर्चा हो रही थी। मैडम सोनिया जी ने हमसे पूछा कि इस मामले में आप लोग सरगुजा पैलेस से राय लिये हो या नहीं लिये हो? तब हमें मालूम हुआ कि इनके उस परिवार से भी कितने रिश्ते हैं और आजादी के बाद से लगातार राजनीतिक, प्रशासनिक और सामाजिक क्षेत्र में भी उनका कितना योगदान था। ये इसका सबसे बड़ा उदाहरण है। महाराज साहब हमारे साथ विधानसभा में लगातार बैठे हैं। अब सरगुजा महाराज होने के बाद भी जनता में कितने लोकप्रिय हैं। जनता से कितने जुड़े हुए हैं, ये इसका एक बड़ा उदाहरण है और जब महाराज साहब को देखते हैं तो राजमाता श्रीमन् और कितने सर्वहारा के प्रति प्रेम रखती थीं, हम लोगों ने महसूस किया।

माननीय अध्यक्ष महोदय, राजनीति, सामाजिक के क्षेत्र में भी उनका बड़ा योगदान था। मैं तो आदरणीय मुख्यमंत्री जी से आग्रह करूंगा कि उनकी स्मृति को चिरस्थायी बनाने के लिए सरगुजा (अंबिकापुर) का जो मेडीकल कॉलेज है, उसको महारानी श्रीमती देवेन्द्र कुमारी सिंहदेव जी के नाम पर करें।(मेजों की थपथपाहट) ऐसा मैं आपसे आग्रह करूंगा और आदरणीय अध्यक्ष जी मैं राजमाता को श्रद्धासुमन अर्पित करता हूँ। परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि उनको अपने पास स्थान दें और हम सब लोग पूरा सदन महाराज साहब के इस दु:ख में महाराज साहब के साथ हैं। ऊँ शांति।

मुख्यमंत्री (श्री भूपेश बघेल) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय संसदीय कार्यमंत्री जी ने जो सुझाव दिया है, मैं उसकी घोषणा करता हूँ कि सरगुजा (अंबिकापुर) मेडीकल कॉलेज का नाम राजमाता श्रीमती देवेन्द्र कुमारी सिंहदेव जी के नाम से रखा जाये। (मेजों की थपथपाहट)

अध्यक्ष महोदय :- माननीय मुख्यमंत्री जी आपको धन्यवाद्।

अप्रवर्तित/प्रकाशन के लिए नहीं

मैं, सदन की ओर से शोकाकुल परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता हूँ। दिवंगत के सम्मान में अब सदन दो मिनट का मौन धारण करेगा।

(सदन द्वारा दो मिनट खड़े रहकर मौन धारण किया गया)

अध्यक्ष महोदय :- दिवंगत के सम्मान में सदन की कार्यवाही पांच मिनट तक के लिए स्थगित।

(11.56 से 12.08 बजे तक कार्यवाही स्थगित रही)

समय :

12:08 बजे **(अध्यक्ष महोदय (डॉ. चरणदास महंत) पीठासीन हुए)**

श्री शिवरतन शर्मा (भाटापारा) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, पूरे प्रदेश में किसान आंदोलित हैं, किसानों का धान नहीं खरीदा जा रहा है, इस सरकार के द्वारा लगातार किसानों को अपमानित किया जा रहा है।

<u>जन्मदिन की बधाई</u>

<u>श्रीमती अनिला भेंडिया, महिला एवं बाल विकास मंत्री</u>

अध्यक्ष महोदय :- छत्तीसगढ़ शासन की माननीया मंत्री श्रीमती अनिला भेंडिया जी का आज जन्म दिवस है। मैं अपनी ओर से और सदन की ओर से उन्हें हार्दिक बधाई देते हुए उनके स्वस्थ, सुदीर्घ एवं उज्जवल भविष्य की कामना करता हूं।

श्री नारायण चंदेल (जांजगीर-चांपा) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, पूरे प्रदेश में किसान आंदोलन कर रहा है। किसान अनिश्चितकालीन धरने पर बैठे हैं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल (रायपुर नगर दक्षिण) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, किसानों ने आत्महत्या करने की अनुमति मांगी है। पूरे प्रदेश में धान नहीं खरीदा जा रहा है।

अध्यक्ष महोदय :- ठीक है, मैं अभी आपको सुन रहा हूं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- पूरी अराजकता की स्थिति है। पूरे प्रदेश में हाहाकार मचा हुआ है। जिनके दम पर ये सरकार बनी है, आज उन्हीं किसानों पर अत्याचार किया जा रहा है, उनके ऊपर लाठीचार्ज किया जा रहा है। आज किसान 84 घंटे से कवर्धा में धरने पर बैठे हुए हैं। वह आत्महत्या की अनुमति मांग रहे हैं। माननीय अध्यक्ष महोदय, इससे ज्यादा लज्जाजनक स्थिति नहीं हो सकती। किसानों को टोकन तक नहीं दिया गया है । (व्यवधान)

असंशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

सदन को सूचना

विधानसभा परिसर स्थित सेन्ट्रल हॉल में प्रवेश की सुविधा

अध्यक्ष महोदय :- विधानसभा परिसर स्थित सेन्ट्रल हाल में प्रवेश की सुविधा इस सत्र से प्रारंभ की जा रही है। सेन्ट्रल हॉल में माननीय मंत्रिगण, माननीय विधायक, पूर्व विधायक, माननीय सांसद, पूर्व सांसद, पत्रकार दीर्घा में प्रवेश के पासधारी पत्रकार एवं विशेष पासधारी गणमान्य व्यक्ति तथा ''सेन्ट्रल हॉल में प्रवेश हेतु अनुमत'' अंकित सील के प्रवेश पासधारी व्यक्ति प्रवेश कर सकेंगे। (व्यवधान) मैं सुन रहा हूं।

नेता प्रतिपक्ष (श्री धरमलाल कौशिक) :- जिन किसानों के दम पर ये सरकार आई है, वह किसान कभी आपको माफ नहीं करेंगे। (व्यवधान)

(भारतीय जनता पार्टी के सदस्यों द्वारा नारे लगाये गये।)

अध्यक्ष महोदय :- आप लोग बैठिए । देखिये मैं औपचारिक बिजनेस के बाद आपकी बात ले रहा हूं, आप क्यों परेशान हो रहे हैं ? (व्यवधान)

नगरीय प्रशासन एवं विकास मंत्री (डॉ. शिवकुमार डहरिया) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, 15 साल किसानों का जो नुकसान किया है । (व्यवधान) [XX][1] (व्यवधान)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, धान में जो भ्रष्टाचार हो रहा है । (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- मैं आपकी बात ले रहा हूं, आप चुप रहें । (व्यवधान)

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, किसान सड़क पर हैं और सरकार उसको [XX] बोल कर डंडा दिखा रही है । यह सरकार ही किसानों के नाम से ऐसा कर रही है । (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- मैं सुन रहा हूं, मैं उसको ले रहा हूं । (व्यवधान)

नेता प्रतिपक्ष (श्री धरमलाल कौशिक) :- कृषि मंत्री जी बैठे हुए हैं, धान खरीदने वाले मंत्री जी बैठे हुए हैं । (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- मैं ले तो रहा हूं, आपकी बातें सुनीं जायेंगी । (व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- किसानों को [XX] कहा गया है । (व्यवधान)

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- आपकी सरकार ने क्या-क्या किया था, हमारी सरकार ने तो ज्यादा से ज्यादा ढ़ाई लाख हजार मीट्रिक टन धान लिया है । (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- बैठिए-बैठिए । मैं एक मिनट केवल कार्यमंत्रणा पढ़ता हूं फिर उसके बाद आपका ले रहा हूं ।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

---

[1] [XX] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसार निकाला गया ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारा यह कहना है कि सरकार ने कहा है कि 15 क्विंटल धान हर किसान का खरीदा जा रहा है । (व्यवधान) परंतु 15 क्विंटल धान नहीं खरीदा जा रहा है । (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- मैं ले तो रहा हूं । (व्यवधान)

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- आपकी सरकार से ज्यादा ढ़ाई लाख हजार मीट्रिक टन धान हम लोगों ने लिया है । (व्यवधान)

खाद्य मंत्री (श्री अमरजीत भगत) :- जिस दिन किसानों के साथ खड़ा होना था उस दिन तो हुए नहीं, अब काला पहन लो या कुछ भी कर लो । (व्यवधान)

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारा आपसे आग्रह यह है कि आप स्थगन को स्वीकार करें या न करें । (व्यवधान) प्रदेश का किसान सड़क पर लेटा हुआ है, उनको लाठी पड़ रही है, उनको [XX] बोला जा रहा है, आप उनकी भावना को समझिए । आप अगर समय बढ़ा देंगे तो उसमें तकलीफ क्या है, आप समय बढ़ाने की घोषणा कर दीजिए, बात खत्म हो जाएगी । (व्यवधान)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- इन्होंने किसानों को [XX] कहा है । (व्यवधान)

श्री धनेंद्र साहू :- माननीय अध्यक्ष महोदय व्यवस्था दे रहे हैं, आप लोग पहले उनकी बात तो सुन लें । (व्यवधान)

श्री धर्मजीत सिंह :- आपने किसानों को [XX] बोल कैसे दिया, सबसे पहले तो सरकार माफी मांगे । (व्यवधान)

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय मुख्यमंत्री जी पूरे 15 क्विंटल धान खरीदने और खरीदी का समय बढ़ाने की घोषणा करें । तब ही हम चर्चा के लिए तैयार हैं । इस बात की घोषणा मुख्यमंत्री जी करें ।

संसदीय कार्यमंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) :- पहले घोषणा कैसे हो जाएगी ? आपने स्थगन दिया है, पहले उस पर चर्चा होगी । (व्यवधान)

समय :
12:15 बजे

<u>स्थगन प्रस्ताव</u>

<u>प्रदेश में किसानों का धान नहीं खरीदा जाना एवं किसानों पर लाठीचार्ज किया जाना</u>

अध्यक्ष महोदय :- मेरे पास प्रदेश में किसानों का धान नहीं खरीदे जाने एवं किसानों पर लाठीचार्ज किये जाने के संबंध में 18 सदस्यों की ओर से स्थगन प्रस्ताव की सूचनाएं प्राप्त हुई हैं :-

प्रथम सूचना - श्री शिवरतन शर्मा, सदस्य

दूसरी सूचना - श्री केशव प्रसाद चन्द्रा, सदस्य

अशोधित/अप्रकाशन के लिए नहीं

तीसरी सूचना - श्री धरमलाल कौशिक, सदस्य
चौथी सूचना - डॉ. रमन सिंह, सदस्य
पांचवी सूचना - श्री अजय चन्द्राकर, सदस्य
छठवीं सूचना - श्री बृजमोहन अग्रवाल, सदस्य
सातवीं सूचना - श्री डमरूधर पुजारी, सदस्य
आठवीं सूचना - श्री सौरभ सिंह, सदस्य
नवमीं सूचना - श्री विद्यारतन भसीन, सदस्य
दसवीं सूचना - श्री नारायण चंदेल, सदस्य
ग्यारहवीं सूचना- श्री धर्मजीत सिंह, सदस्य
बारहवीं सूचना - श्री ननकीराम कंवर, सदस्य
तेरहवीं सूचना - श्री प्रमोद कुमार शर्मा, सदस्य
चौदहवीं सूचना - श्री रजनीश कुमार सिंह, सदस्य
पन्द्रहवीं सूचना - श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू, सदस्य
सोलहवीं सूचना- श्री पुन्नूलाल मोहले, सदस्य
सत्रहवीं सूचना - डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी, सदस्य
अठारहवीं सूचना- श्रीमती इंदू बंजारे, सदस्य

चूंकि श्री शिवरतन शर्मा, सदस्य की सूचना सर्वप्रथम प्राप्त हुई है । अत: उसे मैं पढ़कर सुनाता हूं ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अध्यक्ष महोदय, सरकार ने घोषणा की है कि सभी किसानों का 15 क्विंटल के हिसाब से एक-एक दाना धान की खरीदी की जाएगी । इसलिए मुख्यमंत्री जी पहले इस बात की घोषणा करें और धान खरीदी की अवधि बढ़ाएं । जब तक पूरे धान की खरीदी नहीं होती तब तक खरीदी जारी रहेगी । मुख्यमंत्री जी पहले इस बात की घोषणा करें ।

(भारतीय जनता पार्टी के सदयों द्वारा सरकार के खिलाफ नारे लगाए गए)

अध्यक्ष महोदय :- मैं आपका ही स्थगन ले रहा हूं । देश में छत्तीसगढ़ की पहचान धान का कटोरा के रूप में है । छत्तीसगढ़ की मुख्य फसल धान है । सरकार द्वारा किसानों का धान 2500 रूपये प्रति क्विंटल में खरीदने की घोषणा की गयी, किंतु किसानों का धान मोटा 1815 रूपये प्रति क्विंटल, बारीक धान 1835 रूपए प्रति क्विंटल में खरीदा गया है । सरकार द्वारा किसानों का एक-एक दाना धान खरीदने की घोषणा की गयी, किंतु लाखों किसान जिनका पंजीयन था अपना धान बेचने से वंचित रह गये । सरकार द्वारा समय-समय पर मौखिक रूप से फरमान जारी किये गये, उसका खामियाजा पूरे प्रदेश के किसानों को झेलना पड़ा है। 1 दिसम्बर से 20 फरवरी के मध्य खरीदी हुई, जिसमें लगभग 82

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

दिनों में 23 दिन शासकीय छुट्टियों में निकल गये तथा 15 दिन मौसमी खराबी के कारण टोकन कटने के पश्चात् भी किसानों का धान समितियों द्वारा नहीं खरीदा गया । कुल मिलाकर किसानों को धान बेचने हेतु 40-45 दिन का समय मिला । उक्त समय में समितियों में बारदाना ना होने के कारण तथा मौखिक आदेश द्वारा पंजीकृत किसानों की धान बेचने की क्षमता का चौथाई टोकन काटा गया, जिसका एक उदाहरण अमरीका यदु, ग्राम कोदवा विकासखंड भाटापारा जिसे 4 टोकन 80-80 क्विंटल का धान बेचने के लिए मिले, जबकि उस परिवार को धान बेचना था लगभग 584 क्विंटल अब वह परिवार 164 क्विंटल धान बेचने से वंचित रह गया । वैसे ही नागेन्द्र वर्मा ग्राम खैरा विकासखंड भाटापारा जिसके टोकन 3 काटे गये किंतु मौसम की खराबी के कारण 1 टोकन में धान नहीं लिया गया तथा बाद में टोकन नहीं दिया गया । ग्राम चौरेंगा विकासखंड सिमगा के विरेन्द्र कुमार वर्मा, चन्द्रभान सिंह, धीरेन्द्र वर्मा जैसे किसान भी अपना पूरा धान बेचने से वंचित रह गये । ऐसे ही प्रदेश के लाखों किसान सरकार की वादा खिलाफी के चलते अपनी उपज (धान) को सोसायटियों में बेचने से वंचित रह गये । ऐसी स्थिति पूरे प्रदेश में लाखों किसानों की है । बस्तर संभाग, दुर्ग संभाग में किसानों ने बारदानों की कमी के कारण धान खरीदी बंद होने से दुखी होकर जब प्रदर्शन कर चक्काजाम किया तो उन पर बेरहमीपूर्वक लाठीचार्ज कर आपराधिक प्रकरण कायम किये गये । बहुत से स्थानों पर विरोध स्वरूप किसानों ने अपना धान सड़क पर फेंका व दुखी होकर सूरजपुर जैसे आदिवासी बाहुल्य जिले में अपनी फसल पर आग लगा दी ।

(पक्ष-प्रतिपक्ष के सदस्यों द्वारा परस्पर विरोधी नारे लगाये गये)

अध्यक्ष महोदय :- इस वर्ष पूरे प्रदेश में बहुत अच्छी फसल हुई है, सरकार अपने वादे के अनुसार धान खरीदी करती तो उसे 100 लाख मेट्रिक टन से ज्यादा धान की खरीदी करनी पड़ती, किंतु धान कम खरीदना पड़े इसके लिए सरकार ने सुनियोजित तरीके से धान खरीदी में एक माह का विलंब, छत्तीसगढ़ के किसानों के धान का जब्ती, टोकन के नाम पर परेशान करना, बारदाने की सुनियोजित कमी कर परेशान करना तथा किसान के धान को रिजेक्ट करने का कार्य किया गया। जो किसान मंडियों में धान बेचने आ रहे थे, उन किसानों का भी लाखों क्विंटल धान जब्त किया गया है और परेशान करने के लिये मंडी एक्ट के अतिरिक्त मोटर व्हिकल एक्ट के अंतर्गत कार्यवाही की गयी है। गांव के छोटे किराने दुकानदार जो धान खरीदी करते थे या बाजार/हाट में जो लोग धान खरीदी करते थे, उनके धान की भी जब्ती हुई (व्यवधान) जिसके चलते बस्तर, सरगुजा के बाजार हाटों में व्यक्ति अपनी रोजमर्रा की आवश्यकता का समान भी जो धान बेचकर लेकर जाते थे, उससे वंचित रह गये। (व्यवधान)

सरकार द्वारा किसानों को इस प्रकार धोखा दिये जाने से पूरे प्रदेश का किसान आक्रोशित हैं व अपने को ठगा महसूस कर रहा है।

अतएव इस महत्वपूर्ण विषय पर सदन की कार्यवाही रोककर चर्चा कराये जाने की मांग करता हूं।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

अध्यक्ष महोदय :- इस संबंध में शासन का वक्तव्य क्या है? (व्यवधान)

(सत्ता पक्ष एवं प्रतिपक्ष के सदस्यों द्वारा परस्पर विरोधी नारे लगाये गये)

अध्यक्ष महोदय :- आप स्थगन पर चर्चा करिए। (व्यवधान)

(सत्ता पक्ष के सदस्यों द्वारा नारे लगाये गये)

अध्यक्ष महोदय :- माननीय मुख्यमंत्री। (व्यवधान) अब उनको सुन लीजिए। (व्यवधान)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हम आपसे पूछना चाह रहे हैं कि हमारा जवाब कहां हैं? (व्यवधान)

मुख्यमंत्री (श्री भूपेश बघेल) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, विधान सभा के सभी वरिष्ठ सदस्य हैं। सभी नियम प्रक्रिया जानते हैं और नियम-प्रक्रिया से ही विधान सभा चलती है। (व्यवधान)

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय मुख्यमंत्री जी, जो आपके मंत्री ने बोला है, वे पहले माफी मांगे। (व्यवधान)

श्री भूपेश बघेल :- आपने जो स्थगन दिया है, उसे पढ़ना शुरू किया, लेकिन ये चर्चा में भाग नहीं लेना चाहते। इन्हें संसदीय लोकतंत्र में विश्वास नहीं है। क्योंकि यदि ये चर्चा में भाग लेंगे तो इनकी कलई खुल जायेगी और इसीलिए इस प्रकार हल्ला कर रहे हैं। आप इनसे पूछ लीजिए। (व्यवधान) शून्यकाल में होता यही है। एक-एक सदस्य अपनी बात रखते हैं, लेकिन हमारे विपक्ष के साथी एक साथ खड़े होकर हल्ला कर रहे हैं। कोई बात नहीं रख रहे हैं। हम चाहते हैं कि धान के मामले में किसान के मामले में सदन में चर्चा होनी चाहिए और ये चर्चा में भाग नहीं ले रहे हैं। (व्यवधान)

(विपक्ष के सदस्यों द्वारा नारे लगाये गये)

श्री भूपेश बघेल :- ये पलायन कर रहे हैं। ये बहाना खोज रहे हैं। हम चाहते हैं कि सदन में चर्चा हो। यह किसानों का मामला है। यह सरकार का मामला है और हम इस पर चर्चा करना चाहते हैं। ये क्या बोल रहे हैं? हम लोग क्या कर रहे हैं? अध्यक्ष महोदय, सदन में चर्चा होनी चाहिए, लेकिन ये चर्चा से भाग रहे हैं और भागने का बहाना ढूंढ रहे हैं। (व्यवधान)

(सत्ता पक्ष एवं प्रतिपक्ष के सदस्यों द्वारा परस्पर विरोधी नारे लगाये गये)

श्री भूपेश बघेल :- अध्यक्ष महोदय, मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि यह जो स्थगन लाया गया है, उसे स्वीकार करके चर्चा कराई जाए।

(सत्ता पक्ष एवं प्रतिपक्ष के सदस्यों द्वारा परस्पर विरोधी नारे लगाये गये)

अध्यक्ष महोदय :- माननीय मंत्री जी ने जिन आपत्तिजनक शब्दों का उपयोग किया है, उसे मैं विलोपित कर रहा हूं। सदन की कार्यवाही 10 मिनट के लिए स्थगित।

(12.24 से 12.46 बजे तक सदन की कार्यवाही स्थगित रही)

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

समय :

12:47 बजे **(अध्यक्ष महोदय (डॉ. चरणदास महंत) पीठासीन हुए)**

अध्यक्ष महोदय :- अजय चन्द्राकर जी, चर्चा शुरू करें।

श्री बृजमोहन अग्रवाल (रायपुर नगर दक्षिण) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, एक मंत्री ने यह कहा कि [XX][2] की धान बेचने की कोशिश कर रहे हैं और ये लोग [XX] हैं। ऐसे मंत्री को माफी मांगना चाहिए। हम सब सदन के सम्मानित सदस्य हैं। हमको [XX] कहना, किसानों को [XX] कहना यह पूरे प्रदेश के किसानों का अपमान है। (शेम-शेम की आवाजें) इसके लिए उनको माफी मांगना चाहिए। जब तक वे माफी नहीं मांगेंगे, तब तक मुझे लगता है कि अगर हम [XX] हैं, तो हमको इस सदन में बैठने की आवश्यकता क्या है ? हम लोगों को [XX] कहा जा रहा है, हम लोगों को अपमानित किया जा रहा है।

श्री बृहस्पत सिंह :- सदन से भागने का रास्ता ढूंढ रहे हो क्या ? सदन से भागने का रास्ता ढूंढ रहे हैं क्या ? सदन से भागना चाहते हैं क्या ? अध्यक्ष जी चर्चा के लिए रख लिए हैं तो चर्चा करिये न। सदन में चर्चा करने से बचना चाहते हैं।

अध्यक्ष महोदय :- प्लीज, बैठ जाईये।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- इससे ज्यादा [XX] बात और कोई नहीं हो सकती है। हम आपके संरक्षण में इस सदन में आते हैं और आपका संरक्षण हमें चाहिए। जो हम सदस्यों को [XX] कह रहे हैं, वह कल आपको भी कहेगा। जो मंत्री इतना [XX] है, वह कल आपको भी कहेगा। ...(व्यवधान)

एक माननीय सदस्य :- माफी मांगो।

नगरीय प्रशासन मंत्री (डॉ. शिवकुमार डहरिया) :- मैंने बृजमोहन अग्रवाल को [XX] नहीं बोला है।

डॉ.(श्रीमती) लक्ष्मी ध्रुव :- [XX]शब्द वापिस लीजिये। यह संसदीय भाषा नहीं है। ...(व्यवधान)

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने बृजमोहन अग्रवाल को [XX]नहीं कहा है।

अध्यक्ष महोदय :- आप लोग बैठ जाईये।

एक माननीय सदस्य :- यह आपत्तिजनक शब्द है।

अध्यक्ष महोदय :- दोनों तरफ से जो भी असंसदीय शब्द आये हैं, मैं उन सबको विलोपित करता हूँ। माननी चन्द्राकर जी, चर्चा शुरू करें।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष जी, मैंने किसी का नाम नहीं लिया है। आप जरा संसदीय कार्य की किताब निकाल लें, [XX] शब्द असंसदीय नहीं है।

---

[2] [XX] अध्यक्ष महोदय के आदेशानुसार निकाला गया ।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- तो [XX] शब्द कहां असंसदीय है ? माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने अजय चन्द्राकर और बृजमोहन अगवाल जी को [XX] नहीं कहा है। वहां जो बैठे हैं, किसानों के नाम पर धरना दे रहे हैं, बहुत सारे भा.ज.पा. के [XX] हैं, ऐसा मैंने कहा। और बैठै है माननीय अध्यक्ष महोदय।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- और आपत्तिजनक है, और आपत्तिजनक है। किसानों को [XX] कह रहे हैं।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- किसानों को नहीं कहा है न बृजमोहन अग्रवाल को [XX] कहा है।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, चलिये। चन्द्राकर जी, आप सब निपट लेंगे, मुझे पता है। आप चर्चा शुरू करिये।

नेता प्रतिपक्ष (श्री धरम लाल कौशिक) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह जो मंत्री जी की जो भाषा है, कि वहां पर जो धरना में बैठे हुए हैं, वे [XX][3] हैं। तो अभी कोण्डागांव में जो लोग बैठे हुए हैं, कवर्धा में जो लोग बैठे हुए हैं, पण्डरिया में जो लोग बैठे हुए हैं, केशकाल में जो लोग बैठे हुए हैं, दंतेवाड़ा में जो लोग बैठे हुए हैं, बीजापुर में जो लोग बैठे हुए हैं, मंत्री जी की नजर में ये सब लोग [XX] हैं ? इसीलिए हमने कहा है कि मंत्री जी को माफी मांगनी चाहिए । अध्यक्ष महोदय, ये सरासर अन्नदाता का अपमान है ।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- माननीय नेता जी, ऐसे बहुत सारे लोग बैठे हैं, जो उसी तरह का काम करते हैं ।

श्री धरमलाल कौशिक :- अध्यक्ष महोदय, जो लोग खेती नहीं करते, उनके पेट की चिन्ता करने वाले भी किसान हैं और यहां पर जवाबदार पोस्ट पर बैठा हुआ मंत्री यदि ऐसे किसानों को [XX] कहे, मंत्री उन किसानों को [XX] कहे तो ऐसे मंत्री को तत्काल माफी मांगनी चाहिए, उसके बाद चर्चा शुरू होनी चाहिए ।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने किसानों को नहीं कहा, वहां पर जो वास्तव में भाजपा के बहुत सारे लोग हैं, जो दिन-रात [XX] करते हैं, आज भी वही काम करना चाहते हैं, उनके लिए कहा है ।

श्री बृहस्पत सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, नेता जी, अन्नदाता सबके लिए बहुत महत्वपूर्ण है । अन्नदाताओं के लिए नहीं कहा, अन्नदाता के अन्न पर कमाने वालों को बोला गया है ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, ये भारतीय जनता पार्टी का निर्णय है कि जब तक [XX] कहने वाला मंत्री माफी नहीं मांगेगा, तब तक भारतीय जनता पार्टी उस मंत्री से कोई सवाल जवाब नहीं करेगा, कोई उसका उत्तर नहीं सुनेगा ।

---

[3] [XX] अध्यक्ष महोदय के आदेशानुसार निकाला गया ।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, सत्र भर के लिए यह बहिष्कार रहेगा ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- पूरे सत्र के लिए बहिष्कार होगा ।

अध्यक्ष महोदय :- आप अभी की चर्चा तो शुरू करिए ।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, सत्र भर के लिए बहिष्कार की घोषणा हम नेता प्रतिपक्ष की ओर से इस सदन में करते हैं ।

अध्यक्ष महोदय :- आप अभी चर्चा शुरू करिए न ।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- तुमन नेता प्रतिपक्ष ला पूछबे नहीं करव, तुही मन नेता हो गे हव ।

श्री मोहन मरकाम :- अध्यक्ष महोदय, जो घोषणा माननीय नेता प्रतिपक्ष को करना चाहिए, उसको बृजमोहन अग्रवाल जी कर रहे हैं ।

श्री बृहस्पत सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, नेता जी को घोषणा करनी चाहिए, वह अग्रवाल जी कर रहे हैं ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अध्यक्ष महोदय, हम लोग जो कुछ करते हैं, वह नेता जी की सहमति से ही करते हैं ।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- आपने [XX][4] बोला तो नेता जी की सहमति से बोले होंगे ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- हां, उनकी सहमति से ही बोले हैं । (हंसी)

श्री कुंवर सिंह निषाद :- ये आपका संसदीय शब्द है माननीय ।

<u>स्थगन प्रस्ताव (क्रमश:)</u>

श्री अजय चन्द्राकर (कुरूद) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय कृषि मंत्री जी, किसी बात को गंभीरता से सुनिएगा । ये विषय गंभीर है, जैसा मैं समझता हूं । चूंकि आपके इशारे से यह सदन चलता है तो मैं आपसे अपेक्षा करूंगा कि आप गंभीर रहेंगे, ऐसा सोचता हूं ।

श्री बृहस्पत सिंह :- जो बोलेंगे, सच बोलेंगे।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारे दल ने इस विषय की गंभीरता को देखते हुए कोई राजनीति नहीं की...

अध्यक्ष महोदय :- आपने यह शब्द कहा है कि आपके इशारे से यह सदन चलता है । उसका आशय बता दीजिए ।

(श्री कवासी लखमा और डॉ. शिवकुमार डहरिया के खड़े होने पर)

[4] [XX] अध्यक्ष महोदय के आदेशानुसार निकाला गया ।

असंशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- यहां अध्यक्ष महोदय का ही इशारा चलता है, आप अध्यक्ष जी की अवमानना मत करो।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, (दोनों मंत्रियों की ओर इशारा करते हुए) आशय यही है । उनके आशय में चार-पांच लोग हैं, जो बार-बार डिस्टर्ब करते हैं ।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, निर्देश आपका है।

अध्यक्ष महोदय :- मैं वही कह रहा था कि सदन तो मेरे निर्देश से चलता है ।

श्री धरमलाल कौशिक :- अध्यक्ष महोदय, आपके निर्देश से काम करते हैं, लेकिन उन्होंने कहा है कि संसदीय कार्यमंत्री के दाएं और बाएं के लिए कहा है, उनके अगल-बगल वालों के लिए कहा है ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, नेतृत्व तो आपका है, पर इशारा वे करते हैं कि खड़े हो जाओ तो आजू-बाजू वाले खड़े होते हैं और ऐसे पांच लोग हैं, जो खड़े होकर हम लोगों की निन्दा करते हैं । एक नम्बर, दो नम्बर, तीन नम्बर, चार नम्बर और पांच नम्बर और वे फिर सदन की कार्यवाही बाधित करते हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- ऐसे पांच लोग हैं, जो उनसे शाबासी लेने आते हैं।

श्री बृहस्पत सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आप अंदाजा लगा लीजिए कि ये लोग किसानों के प्रति कितने गंभीर हैं । इनकी मुस्कुराहट और हंसी को देख लीजिए कि ये लोग किसानों के प्रति कितने गंभीर हैं ।

खाद्यमंत्री (श्री अमरजीत भगत) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हमको तो चन्द्राकर जी से ज्यादा कवासी लखमा समझदार लगता है । (हंसी)

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आपको धन्यवाद देता हूं कि आपने नियम को शिथिल करके चर्चा स्वीकार की । मैं नेता प्रतिपक्ष, डॉ. रमन सिंह जी, बृजमोहन जी, ननकीराम जी कंवर या पुन्नूलाल जी मोहले हमारे सचेतक और दल के साथियों को बधाई देता हूं और बधाई का कारण सिर्फ एक लाईन है कि हमने एक नाम दिया और इस विषय पर हम कोई राजनीति बिल्कुल नहीं चाहते, कोई आरोप-प्रत्यारोप नहीं चाहते । मैं अनेक स्थापित तथ्य बता सकता हूं ।

अध्यक्ष महोदय :- गंभीर चर्चा है, कोई डिस्टर्ब न करें, सुनें ।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, धर्मजीत सिंह जी से लेकर बसपा के जो हमारे साथी हैं, मैं उन सबको धन्यवाद देता हूं, जिन्होंने इस विषय की गंभीरता को राजनीति से पृथक किया और सिर्फ एक लाईन में मुझे बात करने के लिए कहा गया । मैं सिर्फ एक उदाहरण बता देता हूं, विषय की गंभीरता के लिए हड़ताल, आन्दोलन सब छप रहे हैं । मेरे क्षेत्र में एक गांव है-उमरदा । उमरदा में माननीय मुख्यमंत्री जी जाते हैं, उनके एक बाल सखा हैं । उस बाल सखा के परिवार ने कोर्ट से आदेश लाकर अपना धान बिकवाया, मैं एक ही उदाहरण बता देता हूं । मैं एथेंटिक 100 उदाहरण बता सकता

अप्रमाणित/असंशोधित के लिए नहीं

हूं, मेरे पास कोर्ट के आदेश की कॉपी भी है, लेकिन मैं ये बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं कि इस सदन में यह स्थगन एक मिनट में समाप्त हो जाएगा । एक बार माननीय जोगी जी ने आग्रह किया, धान खरीदी के मामले में इस सदन में स्थगन आया और वह प्रस्ताव में बदल गया था । यह संसदीय इतिहास में एक ही बार हुआ है कि स्थगन प्रस्ताव में बदला है और वह रिकार्ड बना है तो वह छत्तीसगढ़ की विधान सभा में बना है । यदि सरकार अपने हृदय को, अपने कार्य को, अपने सब चीज को उदार करे तो ऐसे मुद्दे पर हम एक मत हो सकते हैं । और विषय ऐसा है सिर्फ, जो आपने स्थगन के उत्तर में स्वीकार किया है, 19 लाख 55 हजार 126 कृषक हैं । उसमें से 18 लाख कृषक का पंजीकरण हुआ, उसमें से 18 लाख 20 हजार 914 कृषकों ने धान बेचा है । यह समाचार पत्रों में भी आया है । धान बेचने की प्रक्रिया कैसे रहेगी, किस तरह से रही, इसमें मैं जाऊंगा तो फिर उसी दिशा में हो जायेगी, जिसको हम लोगों ने तय किया है कि हम लोग उस दिशा में नहीं बढ़ेंगे । मैं आग्रहपूर्वक संयुक्त विपक्ष और मैं यह कहूंगा कि संतराम जैसे या मोहन मरकाम जैसे लोगों का भी उल्लेख कर देता हूँ । केशकाल की घटना में पेपर में यह बात आई, मुख्यमंत्री जी का बयान आया कि संतराम जी ने फोन पर चर्चा की और मुख्यमंत्री जी ने उनको आश्वासन दिया, अध्यक्ष महोदय मैं आपको क्षमा के साथ आपका सम्मान रखते हुये और मुख्यमंत्री जी का सम्मान करते हुये बोलूंगा, नेता प्रतिपक्ष का भी सम्मान करते हुये कहता हूँ कि स्थगन आये चाहे मत आये, पाटन में या आपके यहां यह स्थिति नहीं बनी, पूरे धान खरीद लिये गये, आप नेता हैं, आप अध्यक्ष हैं, आप पूरे सबके हितरक्षक हैं, आपको मैंडेट इस बात के लिए मिला है, आपकी घोषणा पत्र यह बात कहती है, 1 लाख 34 हजार 212 कृषक जो बाकी हैं, उनका 15 क्विंटल के हिसाब से आप धान खरीद लीजिए और यह अपेक्षा के साथ मैं अपनी बात समाप्त करता हूँ कि 15 क्विंटल जो 1 लाख 34 हजार किसान शेष है, जो किसान 15 क्विंटल नहीं बेच पाये हैं और उसका कारण भी यह है कि टोकन दिया है, ठीक है एक टोकन, दो टोकन, तीन टोकन, पर अदृश्य ताकत, यानी कि आज 200 क्विंटल, 400 क्विंटल, 600 क्विंटल तक लेना है, तो वह टोकन एक्सपायरी हो गया । सीमा से ज्यादा आपने खरीद लिया तो आपका टोकन फेल । इन कारणों से वह टोकन इन्वेलिड नहीं रहा । फिर उनकी गिनती में आ गई कि तीन टोकन है, चौथा टोकन मिला नहीं है, साफ्टवेयर बोलता नहीं कि चौथा टोकन मिलेगा ? मैं विषयान्तर नहीं करना चाहता, जो 15 क्विंटल नहीं बेचे हैं वो, 1 लाख 34 हजार 212 किसान जो बचे हैं, जिसको स्वीकार किया है, उनका ईमानदारी के साथ 15 क्विंटल के हिसाब से खरीद लिया जाये । उसके लिए जितनी अवधि लगे, रहा सवाल ध्यानाकर्षण के उत्तर की प्रक्रिया का कि केन्द्र के लिए खरीदते हैं, राज्य के लिए खरीदते हैं, क्या करते हैं, वह सारी प्रक्रिया हम लोग जानते हैं। छत्तीसगढ़ पहला राज्य बना, जिन्होंने सरकारें आई, गई, वह सिस्टम एक-एक करके मजबूत होते रहा, इस तुलनात्मक आंकड़े का भी कोई मतलब नहीं है कि छत्तीसगढ़ में उपज बढ़ रहा है, सिंचाई बढ़ रही है । श्यौर, इरिगेशन बढ़ रहा है । आपने कितना खरीदा, मैंने कितना खरीदा, किसने परेशान किया,

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

किसने नहीं किया, इन विषय में नहीं जाते हुये माननीय सदन के नेता से इतना ही विनम्र आग्रह है कि जो टोकन के कारण 15 क्विंटल नहीं बेच पाये हैं, उनका 15 क्विंटल खरीदें, जो शेष किसान पंजीकृत बाकी हैं, उनका भी 15 क्विंटल खरीदने के लिए, जितनी अवधि लगे, उतनी अवधि बढ़ायें, इस आग्रह से यह सदन गौरवान्वित होगा, सरकार गौरवान्वित होगी, आपको श्रेय मिलेगा, सरकार को श्रेय मिलेगा, इसी भावनाओं के साथ मैं अपनी बात समाप्त करता हूँ । धन्यवाद ।

अध्यक्ष महोदय :- अमरजीत जी ।

श्री धर्मजीत सिंह :- हम लोग को भी बोलना है अध्यक्ष महोदय ।

अध्यक्ष महोदय:- दूंगा ना आपको ।

श्री धर्मजीत सिंह :- वह तो जवाब आ जायेगा ।

अध्यक्ष महोदय:- नहीं,नहीं । जवाब नहीं आयेगा । चर्चा कर रहे हैं, जवाब मुख्यमंत्री जी देंगे ।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरा एक आग्रह है । इसमें माननीय मुख्यमंत्री जी घोषणा कर दें तो विषय समाप्त हो जाये ।

अध्यक्ष महोदय :- मुख्यमंत्री जी अंत में बोलेंगे । आप परेशान मत होईये ।

श्री धर्मजीत सिंह :- बयान मत पढ़ना, हम लोग पढ़ लिये ।

अध्यक्ष महोदय :- बयान मत पढ़िये । माननीय मंत्री जी, आप लिखित बयान नहीं पढ़ेंगे ।

श्री अमरजीत भगत :- नहीं पढ़ेंगे हम ।

अध्यक्ष महोदय :- अगर कुछ कहना है तो बोल दीजिए । नहीं तो माननीय...। मैं बोल दिया हूँ ।

श्री धर्मजीत सिंह :- अध्यक्ष जी, माननीय मंत्री जी से हमारा आग्रह है कि बयान मत पढ़ें, उनका बयान पढ़ लिये हैं, और कोई बात हो तो आप बोल सकते हैं ।

श्री केशव प्रसाद चन्द्रा :- माननीय मंत्री जी आप इतना बता देंगे कि ...(व्यवधान) आपने .....(व्यवधान).....काटा किसलिए काटा, और कितने का आपने रोका, और क्यों ....(व्यवधान)

श्री रामकुमार यादव :- तुम्हर मन के गोठ ला सुने हन त हमरो गोठ ला सुनव न । (व्यवधान)

श्री अमरजीत भगत :- आप लोगों में बड़ा व्याकुलता है, थोड़ा धैर्य से सुनिये ना । (व्यवधान)

श्री रामकुमार यादव :- थोड़ा हमु मनके ला सुन लौ । (व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- आपको तो कोई अधिकार है नहीं, सदन के नेता बैठे हैं, सदन के नेता जवाब दे दें ना । हमने तो एक लाईन की मांग की है । हमने एक लाईन में निवेदन किया है । (व्यवधान)

श्री अजय चन्द्राकर :- (व्यवधान).....आरोप नहीं लगाये हैं, उसका कारण यही है कि सदन के नेता उपलब्ध है । (व्यवधान)

श्री बृहस्पत सिंह :- शर्मा जी क्या आप सदन को तय करेंगे ....(व्यवधान)

अप्रमाणित/असंशोधित के लिए नहीं

श्री कुलदीप जुनेजा :- कौन बोलेगा, कौन नहीं बोलेगा, आप थोड़ी तय करोगे ।....(व्यवधान)

श्री नारायण चंदेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, गंभीर विषय है । माननीय सदन के नेता यहां उपस्थित हैं तो सदन के नेता .....(व्यवधान)

श्री अमरजीत भगत :- माननीय अध्यक्ष जी, आपने नाम पुकार दिया है । (व्यवधान)

श्री रामकुमार यादव :- तुम्हर गोठ ल सुनेन, हमरो गोठ ल सुनो न जी।

श्री अजय चन्द्राकर :- अध्यक्ष महोदय, मेरा फिर से आग्रह है कि यहां संसदीय परंपरा स्थापित हो इसलिए हमने इसे आरोप-प्रत्यारोप से पृथक रखकर स्थगन जैसे विषय पर जो कि सरकार के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव के बाद सबसे बड़ा मोशन होता है उसमें हमने कोई आरोप नहीं लगाया और आरोप इसलिए नहीं लगाया कि जनता को अपेक्षा है, विपक्ष, सदस्य सबको दलीय प्रतिबद्धता से ऊपर उठकर इसकी अपेक्षा है कि माननीय मुख्यमंत्री जी घोषणा करेंगे और इसलिए माननीय मुख्यमंत्री जी कहें। वह स्वयं सदन में उपस्थित हैं, हम आग्रह करते हैं।

अध्यक्ष महोदय :- करेंगे ना।

श्री अमरजीत भगत :- आप इतनी बात सुना रहे हैं, सामने वाले का भी सुनो ना। आसंदी से आदेश हो गया।

अध्यक्ष महोदय :- धर्मजीत सिंह जी, अमरजीत जी के बोलने के बाद आप बोलेंगे और चन्द्रा जी बोलेंगे। आप दोनों लोग बोलेंगे तब आप यहां आयेंगे। आप लोग उनको बोलने दीजिए, वह भी तैयारी करके आये हैं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारे सदस्य ने सिर्फ एक बिंदु पर बात कही कि जब सदन के नेता यहां पर उपस्थित हैं तो उस बिंदु का जवाब दे दें, बात खत्म हो जायेगी। एक लाईन में समाप्त हो जायेगा, दूसरा कोई औचित्य नहीं है। जब संयुक्त विपक्ष ने एक सदस्य से बोलवा दिया, तो माननीय मुख्यमंत्री जी बोल लें, समाप्त हो जायेगा।

श्री अमरजीत भगत :- भैय्या, आपको क्या हो गया है? आसंदी से नाम आ गया है, आप सुनिए तो।

श्री धर्मजीत सिंह :- अध्यक्ष महोदय, ये बात बहुत सरल तरीके से खत्म हो सकती है। खाद्य मंत्री जी का पूरा सम्मान है, खाद्य मंत्री जी सरकार के अंग हैं। विपक्ष की तरफ से हम लोग एक-एक बोल दें और मुख्यमंत्री जी उसमें जो भी जवाब देना है दे दें, काहे को लंबा खींचना। अध्यक्ष जी, आप अनुमति दें तो हम दोनों बोल लेते हैं, मुख्यमंत्री जी बैठे हैं।

नगरीय प्रशासन मंत्री (डॉ. शिवकुमार डहरिया) :- किसानों के मामले में चर्चा से क्यों भाग रहे हो भाई?

अप्रमाणित/असंशोधित के लिए नहीं

श्री मोहन मरकाम :-आप चर्चा में भी भाग लेना नहीं चाहते ऐसा कैसे होगा? इसमें सभी सदस्य चर्चा करना चाहते हैं, सरकार जवाब देना चाहती है, आप चर्चा से क्यों भागना चाहते हैं?

श्री धर्मजीत सिंह :- अध्यक्ष महोदय, यहां भी हम चर्चा ही कर रहे हैं भैय्या। ये आपको क्या लग रहा है, चर्चा नहीं है तो ये क्या है? हम लोग यहां पर क्या कर रहे हैं? अध्यक्ष महोदय, मेरा मतलब यह है कि हम कोई आरोप-प्रत्यारोप की भावना से यह स्थगन नहीं लाये हैं, इसमें बहुत ही संक्षिप्त रूप से दो-तीन मांगें हैं जिसके बारे में हम लोगों ने यहां पर सरकार का ध्यान आकृष्ट किया है। सरकार के मुखिया यहां बैठे हैं। दो मिनट यदि हमारी भावना सुनकर वह बात कह दें तो बात खत्म हो जायेगी। इसलिए उसमें ज्यादा लंबी चर्चा कराने की कोई जरूरत नहीं है। बिन्दु ही बिल्कुल लिमिटेड है, संक्षिप्त है, यूनिक है।

श्री अमरजीत भगत :- अब स्थगन लाये हो, सुनो न, सुनना भी नहीं चाहोगे तो कैसे होगा।

श्री धर्मजीत सिंह :- अध्यक्ष महोदय, मंत्री साहब, आप जितना बोलेंगे हम सुन लेंगे। मैं तो अध्यक्ष जी से आग्रह कर रहा हूं कि अगर ऐसा न होकर के हम दो लोग बोल लें और मुख्यमंत्री जी बोल लें।

श्री मोहन मरकाम :- उनको सुनने में भी तकलीफ हो रही है।

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- अध्यक्ष जी, यह चर्चा लाकर खुद फंस गये हैं और चर्चा से भागना चाह रहे हैं।

श्री मोहन मरकाम :- आप चर्चा से भाग रहे हैं।

डॉ. रश्मि आशिष सिंह :- जब बात निकली है तो दूर तक जायेगी, सब बात होगी।

नेता प्रतिपक्ष (श्री धरमलाल कौशिक):- माननीय अध्यक्ष महोदय, न तो हमें चर्चा से भागने की जरूरत है और न ही हमें किसान से मुंह छिपाने की जरूरत है। किसान से कौन मुंह छिपा रहा है? हमको आरोप-प्रत्यारोप के दौर से इस सदन में आज एक ऐसा निर्णय हो जाए, और हमने नहीं कहा, आपने जो कहा उसके अनुसार एक एकड़ में सिर्फ 15 क्विंटल की बात की है। हमने तो आपसे कोई यह नहीं कहा कि आप प्रति एकड़ 25 क्विंटल खरीदें। हम उसमें यह भी आरोप नहीं लगा रहे हैं। हम तो यह बोल रहे हैं कि जिन किसानों का बचा हुआ है, जो टोकन लेकर घूम रहे हैं और जितने किसान आपने पंजीकृत किये हैं इसलिए उसमें न तो चर्चा से भागने की जरूरत है, न फंसने की जरूरत है, न हमने ऐसा कोई काम किया है कि हमको सदन से जाना पड़े। मुख्यमंत्री जी से केवल यह आग्रह है कि विवाद को लंबा न करके, वाद-विवाद, लाठीचार्ज और बाकी स्थिति न करके हमारे दोनों माननीय सदस्य चन्द्रा जी, धर्मजीत सिंह जी बैठे हुए हैं, सबकी भावना यही है कि आपने जो पंजीकृत किया और वास्तविक में जिन किसानों का धान नहीं बिका ऐसे किसानों के लिए यदि आप बड़े मन से घोषणा कर देंगे, वह आज सड़कों पर बैठे हुए हैं, आपकी घोषणा के बाद आपको ही धन्यवाद देंगे और उनके धान की खरीदी हो

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

जायेगी, केवल यही हमारी भावना है। इसलिए हमें कोई चर्चा से घबराने और कतराने की जरूरत नहीं है कि हम कोई फंस गये हैं, या हमने कोई चोरी की है। ऐसा नहीं है। हम तो केवल जो लोगों की भावना है, किसानों की भावना है उसे आप तक पहुंचाये हैं और उसी धान को आप खरीद लें, केवल इतना आग्रह करना चाहते हैं।

श्री बृहस्पत सिंह :- नेता जी, लाठीचार्ज की बात कहां से आ गई?

डॉ. (श्रीमती) लक्ष्मी ध्रुव :- जनता के समक्ष सही सूचना जानी चाहिए ।

कृषि मंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) :- अध्यक्ष जी, लोकतंत्र में और इस सदन की स्वस्थ परंपरा है। विपक्ष ने स्थगन का प्रस्ताव दिया, आज एक अच्छा शब्द और सुनने को बार-बार मिल रहा है। संयुक्त विपक्ष निधियां।(हंसी)

श्री कवासी लखमा :- ये कौन सा संयुक्त हैं ?

श्री रविन्द्र चौबे :- कोई आपत्ति नहीं। किसानों के हितों में..।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- दिल्ली में क्या हो रहा है ?

श्री ननकीराम कंवर :- आप दिल्ली में बात सुनकर नहीं आये।

श्री रविन्द्र चौबे :- दिल्ली की चर्चा अगर करना चाहते हैं तो पहले से आप ही को जवाब देना पड़ेगा कि 1815 रूपये से ज्यादा नहीं देने के लिये क्यों मना किया गया ? ये तो आप ही को जवाब देना पड़ेगा। लेकिन मैं अभी दिल्ली में नहीं जाना चाहता, लेकिन आपने अभी अजय जी ने कहा, माननीय नेता प्रतिपक्ष जी ने कहा कि कोई आरोप-प्रत्यारोप की बात नहीं है तो स्थगन प्रस्ताव क्यों लाये ? (हंसी) और उस स्थगन प्रस्ताव के मुद्दों को तो आपने देखा ही है उसमें क्या लिखा है ? और सारे मुद्दे अगर आपने दिये तो उत्तर तो आपको सुनना ही होगा। परिस्थितयां क्या है ? दिल्ली किस तरीके से रोड़ा अटका रही है ? हम पूरा धान खरीदना चाहते हैं, हमें अनुमति क्यों नहीं देना चाहती ? आखिर सरकार उत्तर तो देगी ? माननीय मुख्यमंत्री जी प्रधानमंत्री जी से मिलने का टाईम लिये। कृषि मंत्री जी से मुलाकात किये। बायोएथनाल बनाने के लिये हमने अनुमति की मांग की। हमारा चावल का निष्पादन कैसे होगा ? हम धान की.....।

श्री शिवरतन शर्मा :- संसदीय कार्य मंत्री जी इस भाषण के बजाय खाली ये बता दो धान खरीदोगे की नहीं खरीदोगे। (व्यवधान)

डॉ. (श्रीमती) लक्ष्मी ध्रुव :- सुनने के लिये भी तैयार नहीं हैं। (व्यवधान) जो गलत चीज किये हैं उसे सुनना पड़ेगा।

श्री शिवरतन शर्मा :- आज प्रदेश के किसान भटक रहे हैं। (व्यवधान)

श्री अजय चंद्राकर :- आप अच्छा एक लाईन की बात है, आप सक्षम हैं तो बोल दीजिए। (व्यवधान)

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री शिवरतन शर्मा :- मुख्यमंत्री जी बैठे हैं, मुख्यमंत्री जी घोषणा कर सकते हैं। अगर मुख्यमंत्री ने आपको अधिकार दिया है तो आप घोषणा कर दो की सारे किसानों का धान खरीदेंगे। (व्यवधान)

श्री बृहस्पत सिंह :- धान की...(व्यवधान)

श्री मोहन मरकाम :- माननीय अध्यक्ष जी, पहली बार हो रहा है कि विपक्ष स्थगन लाकर चर्चा नहीं करना चाहता। इससे साफ जाहिर हो रहा है।

श्री धर्मजीत सिंह :- सर, एक मिनट। अध्यक्ष महोदय....। (व्यवधान)

श्री नारायण चंदेल :- चौबे जी...।(व्यवधान)

श्री शिवरतन शर्मा :- हमारी सिर्फ एक चर्चा है कि किसानों का पूरा धान खरीदें। एक लाख चौतीस हजार जो किसान बाकी हैं उनका खरीदो, बाकी जो किसानों का धान 18 लाख किसानों का 15 क्विंटल के हिसाब से खरीदा गया। वह पूरा धान खरीदो, हमारी एक ही मांग है।

श्री धर्मजीत सिंह :- अध्यक्ष महोदय, विपक्ष एक मिनट...।

श्री मोहन मरकाम :- सरकार जवाब देगी न।

श्री रविन्द्र चौबे :- एक मिनट मोहन भैया, बृहस्पत जी।

श्री बृहस्पत सिंह :- आपकी मांग है या हुकुम है।

श्री रविन्द्र चौबे :- आपकी सद्भावना के लिये आपको बहुत धन्यवाद। लेकिन इतनी महान भावना अगर आपके हृदय में थी तो स्थगन के बजाए माननीय मुख्यमंत्री जी से मिल लेते। अरे 83 लाख मीट्रिक टन धान खरीदे हैं। (मेजों की थपथपाहट) (व्यवधान)

नेता प्रतिपक्ष (श्री धरमलाल कौशिक) :- आपने एहसान नहीं किया है। आपने 83 लाख मीट्रिक टन धान खरीदे हैं। (व्यवधान) आपने किसानों के...।(व्यवधान) दाने-दाने की बात किये हैं और दाने दाने में 15 क्विंटल...। (व्यवधान)

श्री रविन्द्र चौबे :- 15 हजार करोड़ रूपये का धान खरीदे हैं। (व्यवधान)

श्री धरमलाल कौशिक :- आप किस मुंह से बात कर रहे हैं। मंत्री जी आप एहसान दिला रहे हैं कि मैं 83 लाख मीट्रिक टन धान खरीदा हूं।

श्री रविन्द्र चौबे :- खरीदे हैं।

श्री धरमलाल कौशिक :- आपने 15 क्विंटल नहीं खरीदा।

श्री रविन्द्र चौबे :- खरीदे हैं।

श्री धरमलाल कौशिक :- जो वादा किया, आपने वादा नहीं निभाया है। वादाखिलाफी किया और वादाखिलाफी करने के बाद में आज पंजीकृत किसानों का धान नहीं खरीदा है। आप पंजीकृत किसानों का धान नहीं खरीद रहे हो। (व्यवधान)

श्री नारायण चंदेल :- जो वादा किया है निभाना पड़ेगा। (व्यवधान)

अप्रमाणित/प्रकाशन के लिए नहीं

डॉ. (श्रीमती) लक्ष्मी ध्रुव :- जो वादा किये हैं, उसी को तो निभा रहे हैं।(व्यवधान)

श्री धर्मजीत सिंह :- अध्यक्ष महोदय.....। (व्यवधान)

श्री धरमलाल कौशिक :- जो आपने कहा है, हमने तो उसकी को कहा है। (व्यवधान) आप केवल इतना घोषणा कर दीजिए। (व्यवधान) ये जवाब सुनने का थोड़ी है। (व्यवधान) हम तो चाहते हैं कि (व्यवधान) ये जवाब की बात नहीं है। (व्यवधान)

श्री मोहन मरकाम :- माननीय अध्यक्ष जी....।(व्यवधान)

श्री नारायण चंदेल :- जो वादा किया, वह निभाना पड़ेगा। (व्यवधान)

श्री रविन्द्र चौबे :- हम जो धान खरीदी कर रहे हैं..(व्यवधान)

श्री नारायण चंदेल :- जो वादा किया, वह निभाना पड़ेगा। (व्यवधान)

श्री धरमलाल कौशिक :- हमने नहीं किया था, आपने वादा किया था कि 15 क्विंटल (व्यवधान) उसमें कोई 25 क्विंटल की बात नहीं है। (व्यवधान)

श्री धर्मजीत सिंह :- ये बयान खाद्य मंत्री जी का ही है। (व्यवधान) ये खाद्य मंत्री जी का ही बयान है, हम पढ़ लिये हैं।

श्री अजय चंद्राकर :- चौबे जी, आप अनुरोध हैं, माननीय मुख्यमंत्री जी सदन में और हमने कहा है कि वाद विवाद प्रक्रिया से उठकर स्थगन की प्रक्रिया से ऊपर उठकर, मैंने अपने भाषण में इस बात को कहा है कि (व्यवधान) इसलिए आप खड़े होकर (व्यवधान) आप सबका आग्रह है। आपका इस विषय में सुनने का मन नहीं है।

श्री धर्मजीत सिंह :- अध्यक्ष जी, यह दुखित बयान अमरजीत भगत जी का है। (व्यवधान)

श्री अमरजीत भगत :- माननीय अध्यक्ष जी। (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- चलिये शांत रहिए। अमरजीत जी। (व्यवधान)

श्री अजय चंद्राकर :- आपसे आग्रह है, बोलिए दो लाईन में इसको खत्म करिए। (व्यवधान)

उच्च शिक्षा मंत्री (श्री उमेश पटेल) :- अजय भैया, अगर आप लोग प्रश्न पूछते हैं तो जवाब पाने के लिये दिल भी बड़ा रखिये। आप लोग जवाब क्यों नहीं ले रहे हैं? जब प्रश्न पूछ रहे हो तो जवाब भी लो। (व्यवधान)

श्री मोहन मरकाम :- सरकार जवाब देना चाहती है।

अध्यक्ष महोदय :- अमरजीत जी।

श्री अमरजीत भगत :- जी।

श्री धर्मजीत सिंह :- ये नीतिगत निर्णय है और खाद्य मंत्री जी आपके जवाब देने के लिए इसमें सब वह नहीं हैं। इसलिए हम बोल रहे हैं कि माननीय मुख्यमंत्री के रहते कोई निर्णय हां या ना जो भी होगा, खाद्य मंत्री नहीं बोल सकते।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री अजय चंद्राकर :- अब इतना भाषण में कोई सिस्टम ही नहीं है। (व्यवधान) ये भाषण में कोई दिशा ही नहीं है। (व्यवधान)

श्री उमेश पटेल :- अरे, लेंगे न भैया अब क्यों...।(व्यवधान)

श्री धर्मजीत सिंह :- अध्यक्ष जी हम चाहते हैं कि हमारी बात को सुन लीजिए और मुख्यमंत्री जी को बोल दीजिए।

श्री उमेश पटेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, क्या किसी ने जवाब देने से माना किया है?

श्री धर्मजीत सिंह :- नहीं। हम मंत्री जी का जवाब पढ़ लिये हैं।

श्री उमेश पटेल :- आप सबका जवाब सुन लेंगे तो क्या हो जाएगा है?

श्री मोहन मरकाम :- साहब, जवाब तो सुन लीजिए। वे जवाब देने के लिए तैयार हैं।

श्री धर्मजीत सिंह :- देखिए, आदरणीय मंत्री जी का जवाब आप लोगों के पास ही नहीं है। हमारे पास है।

श्री अमरजीत भगत :- आप हमारी बात को सुनेंगे या नहीं?

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, उसको क्या सुनना है?

अध्यक्ष महोदय :- माननीय मंत्री, अमरजीत भगत जी, ये आपने बहुत सारे कागज उठाकर रखे हैं, उसको अंदर रखिए।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, ये उसी से डर गये हैं।

अध्यक्ष महोदय :- उसी से डर रहे हैं। आप अपना कागज थोड़ा अंदर रख दीजिए।(हंसी)

डॉ. रमन सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, बारिश, ओले में किसानों को 110 घण्टे से ज्यादा समय हो गया।

श्री अमरजीत भगत :- एक विषय, सब विषय आएंगे।

डॉ. रमन सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यहां पूरी इस बहस को छत्तीसगढ़ का एक-एक किसान सुन रहा है। पूरे छत्तीसगढ़ के सारे 19 लाख किसान एक लाईन का जवाब सुनने के लिए आतुर हैं। क्या उनका बाकी धान खरीदा जाएगा? एक लाख, 34 हजार किसानों को जो छूट गये हैं, जिनका 15 क्विंटल धान नहीं खरीदा है। एक लाईन में जवाब आ जाये कि हम इस धान को खरीदेंगे, इतने में ही मामला खत्म होता है। इसमें लम्बी बहस की जरूरत नहीं है। कोई चर्चा की जरूरत नहीं है।

श्री मोहन मरकाम :- माननीय डॉ. साहब, स्थगन लाने की जरूरत क्या थी? अब सदन जवाब देना चाहते हैं तो स्थगन लाने की क्या जरूरत थी?

डॉ. रमन सिंह :- अजय चन्द्राकर जी ने जो एक लाईन में कहा था और एक लाईन आ जाये। पूरे दिन भर का समय बर्बाद करने की जरूरत ही नहीं है। ये किसानों की पीड़ा है। पूरे छत्तीसगढ़ का

असंशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

किसान इस विधान सभा की ओर देख रहा है, इंतजार कर रहा है और यदि किसानों का आंदोलन समाप्त करना है।

श्री मोहन मरकाम :- माननीय अध्यक्ष महोदय, सरकार जवाब देना चाहती है। मगर इनको स्थगन लाने की क्या जरूरत थी?

डॉ. रमन सिंह :-माननीय अध्यक्ष महोदय, यदि यहां से घोषणा हो जाती तो छत्तीसगढ़ के किसान सरकार को धन्यवाद् देंगे। मैं आपसे यही कहना चाहता हूँ।

अध्यक्ष महोदय :- ठीक है। आप लोग बैठ जाएं।

श्री बृहस्पत सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय जी जैसी घोषणा करते थे, वैसी हम लोग घोषणा नहीं करना चाहते हैं।

अध्यक्ष महोदय :- माननीय मंत्री जी, कृपया आप बैठिए। माननीय डॉ. साहब और भाईजान आप भी कृपया करके बैठ जाईये। डॉ. रमन सिंह जी ने जो चिंता व्यक्त की है, जो आपने एक लाईन का प्रश्न रखा है, उस एक लाईन के जवाब को माननीय मुख्यमंत्री जी के मुख से सुनना चाहते हैं। वे जवाब देंगे। मगर उसके पहले चूंकि प्रदेश की जनता वस्तुस्थिति जानना चाहती है थोड़ा बहुत उनको बोलने दीजिए। पूरा पेपर नहीं पढेंगे।(मेजों की थपथपाहट)

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, उनके उत्तर को टेबल करवा दीजिए। उनके उत्तर को पटल पर रखवा दीजिए, कल प्रदेश की जनता तक पहुँच जाएगा। (व्यवधान)

श्री मोहन मरकाम :- माननीय अध्यक्ष महोदय, ये सुनना भी नहीं चाहते। (व्यवधान)

श्री नारायण चंदेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इस प्रदेश का जो किसान है, वे चाहते हैं कि ''तु इधर उधर की बात न कर, ये बता की कारवां डूबा क्यूं ?

श्री मोहन मरकाम :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इससे ज्यादा दुर्भाग्य और क्या हो सकता है कि विपक्ष इतना कमजोर हो गया है कि आज चर्चा करने के लायक भी नहीं है। (व्यवधान) ये चर्चा भी नहीं करना चाहते हैं।

नगरीय प्रशासन मंत्री (डॉ. शिवकुमार डहरिया) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, ये काला कपड़ा क्यों पहनकर आये हैं ?

श्री मोहन मरकाम :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इसे क्या इतना लाचार विपक्ष कहें? (व्यवधान) आप चर्चा भी नहीं करना चाहते हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने भावनाएं व्यक्त कीं।

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, ये सरकार का वायदा था कि एक-एक दाना धान खरीदेंगे। एक लाख लोगों का धान नहीं खरीदा गया। मतलब आपका वायदा पूरा नहीं हुआ है। (व्यवधान) आप उसको सुन तो लीजिए।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, उन्होंने जो भावनाएं व्यक्त कीं। माननीय मंत्री जी का उत्तर टेबल करवा दीजिए। सबको वितरीत हो जाएगा और माननीय मुख्यमंत्री जी जवाब दे दें। दोनों बातें आ जाये।

श्री मोहन मरकाम :- आप चर्चा सुनना क्यों नहीं चाह रहे हैं? (व्यवधान)

श्री धर्मजीत सिंह :- एक मिनट। माननीय मंत्री जी, एक तो आप किसानों का धान खरीद नहीं सके और इतना मोटा फाईल रखकर खड़े हो रहे हैं। क्या बोलेंगे? हम उनका ये बयान पढ़ लिये हैं।

श्री बृहस्पत सिंह :- अगर आपको मुख्यमंत्री जी से ही चर्चा करना था तो विपक्ष के डेलीगेट को मुख्यमंत्री जी से मिल लेना था। सदन में आपको स्थगन लाने की जरूरत क्या थी? और सदन में लाये तो चर्चा से क्यों भाग रहे हैं?

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय हमारी बात सुन लीजिए और मुख्यमंत्री जी को निर्देशित करिये। वे वितरित करे या न करे (व्यवधान) लेकिन इस प्रदेश की जनता जानना चाहती है कि विधान सभा में विपक्ष के द्वारा उठाये गये किसानों के मुद्दों के प्रति ये सरकार संवेदनशील है या नहीं है? (व्यवधान) आप बोलिए कि हम धान नहीं खरीदेंगे।

श्री अमरजीत भगत :- हम उसी में चर्चा करना चाहते हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- आप इनके उत्तर टेबल करवा दीजिए। माननीय मुख्यमंत्री जी सीधे उत्तर देंगे।

श्री धर्मजीत सिंह :- आप बोलिए कि हम धान नहीं खरीदेंगे या इनको बोलने के लिए घोषित करिये।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, ये तो डिक्टेट कर रहे हैं। (व्यवधान) सदन चलना चाहिये।

श्री नारायण चंदेल :- सरकार का बयान आ जाये कि हम धान नहीं खरीदेंगे। ये बयान दे दे।

श्री धर्मजीत सिंह :- विपक्ष की भावना सुनिये। प्रदेश की बहुत बड़ी जनसंख्या का प्रतिनिधित्व हम लोग करते हैं।

श्री बृहस्पत सिंह :- ये लोग चर्चा नहीं करना चाहते हैं। (व्यवधान)

श्री धर्मजीत सिंह :- इसलिये हमारी भावना को संरक्षण देने का काम आप कर रहे हैं और सक्षम आदमी मुख्यमंत्री हैं। सक्षम नेता है। प्रदेश के मुखिया है। हम मुखिया से आग्रह करते हैं। इनका बयान तो पढ़ लिये हैं। (व्यवधान) हम लोग पढ़े हैं और अब नई बात क्या बोलेंगे ?

श्री उमेश पटेल :- धर्मजीत भैया, अगर जवाब आ जायेगा तो क्या हो जायेगा? आपने सवाल पूछा है तो जवाब तो लीजिए।

अप्रकाशित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री धर्मजीत सिंह :- यह जवाब तो लिखित में आ गया। आप बोल लीजिए, आप बोल लीजिए, और कोई बोलना चाहें तो वह भी बोल लें, आप बोल लीजिए न। मंत्री जी का जवाब हमारे पास है। हमने मंत्री जी का जवाब पढ़ लिया है।

श्री मोहन मरकाम :- आप चर्चा के लिये लाये हैं तो चर्चा क्यों नहीं करना चाहते हैं? आप सदन का मजाक मत बनाईये।

श्री धर्मजीत सिंह :- तीन पेज का जवाब आने के बाद मंत्री और क्या बोलेंगे ? यह तीन पन्ने का जवाब लिखित में आ गया है और हमको विधानसभा से मिला है।

श्री मोहन मरकाम :- सदन का समय बरबाद कर रहे हैं।

श्रीमती रश्मि आशीष सिंह :- सदन के बाकी सदस्यों को जानकारी मिलेगी, इसलिए चर्चा होना चाहिए। सदन के बाकी सदस्यों को जानकारी नहीं है, उनकी जानकारी के लिए चर्चा होना चाहिए।

डॉ. लक्ष्मी ध्रुव :- आप लोग बार-बार किसानों को गुमराह कर रहे हैं।

श्रीमती रश्मि आशीष सिंह :- आपके पास जो जानकारी है, वह बाकी सदस्यों को नहीं है, इसलिए वह जानकारी सदन में आने दी जाये।

श्री कुलदीप जुनेजा :- आसंदी से मुख्यमंत्री जी को बोलने के लिए कहा गया है, आप लोग आसंदी का सम्मान करिये न। .. (व्यवधान)..

श्री बृहस्तप सिंह :- आखिर यह चर्चा क्यों नहीं करना चाहते हैं ?

श्री मोहन मरकाम :- माननीय अध्यक्ष जी, यह चर्चा से क्यों भाग रहे हैं ? .. (व्यवधान)..

(भारतीय जनता पार्टी एवं भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सदस्यों द्वारा परस्पर विरोधी नारे लगाये गये)

अध्यक्ष महोदय :- बैठिये। यहाँ कितने ऐसे किसानों के हितैषी विधायक बैठे हैं जो धोती पहनकर आये हैं ? कितने लोग सूट में आये हैं ? यह भी तो प्रदेश की जनता देख रही है। मेरा कहना यह है कि डॉ. रमन सिंह जी जैसा चाहते हैं, माननीय मुख्यमंत्री जी वैसा जवाब देंगे। मगर आप लोग संयुक्त विपक्ष का नाम लेकर केशव चन्द्रा जी और धर्मजीत सिंह जी भी बोलना चाहते हैं, उसी तरीके से पक्ष के एक-दो लोगों को बोलना पड़ेगा। वह तो माननीय मंत्री हैं। माननीय मंत्री जी थोड़ा जवाब देंगे, उसके बाद मुख्यमंत्री जी बोल लेंगे।

श्री शिवरतन शर्मा :- माननीय अध्यक्ष जी, आपने अमरजीत जी को बुलाया है, अमरजीत जी के विभाग ने पूरी धान खरीदी का काम किया है।

अध्यक्ष महोदय :- कर लिया।

श्री शिवरतन शर्मा :- तो सीधा माननीय मुख्यमंत्री जी का जवाब आये न ?

अध्यक्ष महोदय :- ऐसा नहीं हो सकता।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्रीमती रश्मि आशीष सिंह :- आपके अनुसार सदन नहीं चलेगा, अध्यक्ष महोदय के निर्देश के अनुसार चलेगा। आप लोग अपनी सीमायें लांघ रहे हैं।

अध्यक्ष महोदय :- माननीय मंत्री जी।

श्री मोहन मरकाम :- .. (व्यवधान).. कौन बोलेगा, कौन नहीं बोलेगा, यह आसंदी तय करेगी, आप तय नहीं करेंगे।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, सबसे पहले मैं आपको धन्यवाद देता हूं कि विपक्ष के द्वारा जो स्थगन लाया गया है, उस महत्वपूर्ण विषय पर बोलने के लिए आपने मुझे अवसर प्रदान किया है। माननीय अध्यक्ष महोदय, किसी भी मुद्दे पर स्थगन लाना, उसमें प्रश्न लगाना, उसमें चर्चा के लिए समय मांगाना विपक्ष का अधिकार है। लेकिन अगर आज विपक्ष ने किसानों के मामले में स्थगन लाया है तो उनको जवाब सुनना चाहिए।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आपका निर्देश शिरोधार्य है, परन्तु सरकार का मुखिया मुख्यमंत्री होता है। घोषणा करने का अधिकार मुख्यमंत्री को है, मंत्री को नहीं है। हम एक ही प्रश्न का जवाब चाहते हैं, माननीय मुख्यमंत्री जी उसका जवाब दे दें, बाकी परिस्थितियॉ हमको मालूम है। इसलिए आप इस बात का निर्देश देकर, क्योंकि मुख्यमंत्री जी मंत्री को अधिकार नहीं है कि वह घोषणा कर पाये, इसलिए मुख्यमंत्री जी घोषणा कर दें कि वह धान खरीदेंगे या नहीं खरीदेंगे। यदि नहीं खरीदना है तो बोल दें कि नहीं खरीदेंगे। .. (व्यवधान)..

श्री अरमजीत भगत :- माननीय अध्यक्ष यह किसानों को मामला है, इनको धैर्य से जवाब सुनना चाहिए।

अध्यक्ष महोदय :- माननीय मंत्री जी, एक मिनट। मैं बार-बार कह चुका हूं, फिर कह रहा हूं कि आप जो चाहते हैं, वह घोषणा माननीय मुख्यमंत्री जी ही करेंगे, मगर प्रदेश को वस्तुस्थिति क्या है, यह थोड़ा सा जानने की जरूरत है। सिर्फ दो शब्द वह बोलेंगे, दो शब्द माननीय धर्मजीत सिंह जी बोलेंगे और दो शब्द केशव चन्द्रा जी बोलेंगे। उसके बाद मुख्यमंत्री जी बोलते रहेंगे। इन तीनों को बोलना ही है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- वह पत्रकारों को जाकर बता दें। पत्रकार लोगों को मुख्यमंत्री जी ही जवाब दें। .. (व्यवधान)..

श्रीमती रश्मि आशिष सिंह :- ये लोग लोकतंत्र में बोलने के अधिकार का बार-बार हनन करते हैं । (व्यवधान) ये बार-बार सत्तापक्ष को बोलने नहीं देते हैं । (व्यवधान)

नगरीय प्रशासन एवं विकास मंत्री (डॉ. शिवकुमार डहरिया) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, एक-एक घंटे बोलेंगे ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री बृहस्पत सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इस गंभीर मामले पर हम सभी लोग भाग लेना चाहते हैं । (व्यवधान)

श्री अमरजीत भगत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह किसानों का प्रदेश है । इसे धान का कटोरा के नाम से जाना जाता है । हमारी प्राथमिकता किसान है और मैं प्रदेश के मुख्यमंत्री जी को बहुत-बहुत धन्यवाद देना चाहता हूं । (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- आप वस्तुस्थिति की जानकारी रखें ।

नेता प्रतिपक्ष (श्री धरमलाल कौशिक) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरे पास वस्तुस्थिति है, किसान सड़कों पर बैठे हुए हैं । आपका जवाब आया है, किसान पूरे सड़कों पर बैठे हुए हैं, बरसात में भी सड़क पर बैठे हुए हैं । (व्यवधान) इसलिए हम लोग चाहते हैं कि इसका निर्णय चूंकि कोई बहुत कुछ बोलने की जरूरत नहीं है । आप स्वीकार करते हैं या नहीं करते हैं यह तो बता दीजिये, मंत्री जी को अधिकार नहीं है । (व्यवधान)

डॉ. शिवकुमार डहरिया :- आप पहले सुन तो लीजिए, धैर्य रखिए ।

श्री अमरजीत भगत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हम एक-एक बिंदु पर चर्चा करना चाहते हैं । (व्यवधान)

श्री धरमलाल कौशिक :- यदि मंत्री जी को घोषणा करने का अधिकार है तो मुख्यमंत्री जी से अनुमति ले लें । हम मुख्यमंत्री जी से भी मांग नहीं करेंगे । (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- नहीं, उनको अधिकार नहीं है । (व्यवधान)

श्री धरमलाल कौशिक :- यहां कृषि मंत्री जी बैठे हुए हैं लेकिन जो किसान वहां बैठे हुए हैं आखिर वे कब तक बैठे रहेंगे । (व्यवधान)

श्री अमरजीत भगत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, ये चर्चा से भागना चाहते हैं, बहुत दुखद विषय है ।

श्री धरमलाल कौशिक :- यह हमारी कोई मांग नहीं है, किसानों के लिये सरकार ने जो घोषणा की है केवल उसी को लेकर बैठे हुए हैं और वे देख रहे हैं कि हमारे धान को खरीदेंगे । अब उसमें कोई और परिस्थितियां तो हैं ही नहीं । (व्यवधान)

श्री अमरजीत भगत :- जिस दिन किसान दिक्कत में थे उस दिन किसानों के साथ भारतीय जनता पार्टी का कोई नेता खड़ा नहीं हुआ । (मेजों की थपथपाहट) (व्यवधान) जिस दिन केंद्र सरकार किसानों की धान खरीदी नहीं कर रही थी उस समय किसान हितैषी नेता कहां थे । (व्यवधान)

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हम यह सुनने के लिये नहीं बैठे हैं । (व्यवधान) हमें मालूम है कि किसान हितैषी कौन है । वादा करने के बाद वादे से कैसे मुकरा जाता है यह स्वयं बता रहे हैं । जवाब यह थोड़ी है । (व्यवधान) माननीय अध्यक्ष महोदय, हम लोग यह चाहते हैं

अप्रमाणित/प्रकाशन के लिए नहीं

कि माननीय मुख्यमंत्री जी घोषणा करें कि आखिर उनके धान को लेंगे कि नहीं लेंगे, आखिर कब तक लेंगे और आज उसका निर्णय हो जाए । (व्यवधान)

श्री अमरजीत भगत :- यह सरकार किसानों के साथ थी, किसानों के साथ है और किसानों के साथ रहेगी । (व्यवधान)

(सत्तापक्ष और प्रतिपक्ष के सदस्यों द्वारा परस्पर विरोधी नारे लगाये गये ।)

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय अध्यक्ष महोदय, सदन के नेता किसानों के विषय पर कुछ न कुछ बोलें और इस अपेक्षा से हम लोग यहां पर मांग कर रहे हैं । (व्यवधान) किसान धरने पर बैठे हुए हैं । माननीय मंत्री जी का जवाब आ गया है अब इसमें सुनने के लिये कुछ नहीं है और इसलिए हम माननीय मुख्यमंत्री जी से हम चाहते हैं कि जो भी निर्णय लिये होंगे यदि उसे बता दें तो निश्चित रूप से किसानों को एक संदेश जाएगा और हम चाहते हैं कि मुख्यमंत्री जी कुछ बोलें । (व्यवधान)

(प्रतिपक्ष के सदस्य नारे लगाते हुए गर्भगृह में आये)

(सत्तापक्ष और प्रतिपक्ष के सदस्यों द्वारा परस्पर विरोधी नारे लगाये गये)

समय :
1:25 बजे

<u>गर्भगृह में प्रवेश पर निलम्बन</u>

अध्यक्ष महोदय :- विधान सभा की प्रक्रिया तथा कार्य संचालन संबंध नियमावली के नियम 250 के उप नियम (1) के तहत निम्न सदस्य अपने स्थान को छोड़कर गर्भगृह में प्रवेश करने के कारण सभा की कार्यवाही से स्वमेव निलंबित हो गये हैं :-

<u>भारतीय जनता पार्टी</u>

1. श्री धरमलाल कौशिक
2. डॉ. रमन सिंह
3. श्री बृजमोहन अग्रवाल
4. श्री नंनकीराम कंवर
5. श्री पुन्नूलाल मोहले
6. श्री अजय चन्द्राकर
7. श्री नारायण चंदेल
8. श्री शिवरतन शर्मा
9. डॉ. कृष्णमूर्ति बांधी
10. श्री सौरभ सिंह
11. श्री डमरूधर पुजारी

अप्रकाशित/प्रकाशन के लिए नहीं

12. श्री विद्यारतन भसीन

13. श्री रजनीश कुमार सिंह

14. श्रीमती रंजना डीपेन्द्र साहू

<u>जनता कांग्रेस छत्तीसगढ (जे.)</u>

1. श्री धर्मजीत सिंह

2. डॉ. रेणु अजीत जोगी

3. श्री प्रमोद कुमार शर्मा

<u>बहुजन समाज पार्टी</u>

1. श्री केशव प्रसाद चन्द्रा

2. श्रीमती इन्दू बंजारे

कृपया, निलंबित सदस्य सदन से बाहर जायें । मैं निलंबन की अवधि पश्चात् निर्धारित करूंगा ।

अध्यक्ष महोदय :- सभा की कार्यवाही भोजन अवकाश के लिए 3.00 बजे तक के लिए स्थगित् ।

(1:27 से 3:00 बजे तक अंतराल)

समय :
3:00 बजे

(अध्यक्ष महोदय (डॉ. चरणदास महंत) पीठासीन हुए)

<u>कार्यमंत्रणा समिति का षष्ठम् प्रतिवेदन</u>

अध्यक्ष महोदय :- कार्यमंत्रणा समिति की बैठक सोमवार, दिनांक 24 फरवरी, 2020 में लिये गये निर्णय अनुसार वित्तीय एवं विधायी कार्य पर चर्चा के लिये सिफारिश की गई, जो इस प्रकार है :-

1. <u>वित्तीय कार्य</u>

(1) वित्तीय वर्ष 2019-20 के तृतीय अनुपूरक अनुमान का उपस्थापन मंगलवार, दिनांक 25 फरवरी, 2020 को तथा इस अनुपूरक अनुमान की मांगों पर चर्चा, मतदान एवं तत्संबंधी विनियोग विधेयक का पुर:स्थापन, विचार एवं पारण शुक्रवार, दिनांक 28 फरवरी, 2020 को रखा जाये तथा इस पर चर्चा हेतु 3 घंटे का समय निर्धारित किया जाता है।

(2) वित्तीय वर्ष 2020-2021 के आय-व्ययक के उपस्थापन मंगलवार, दिनांक 3 मार्च, 2020 को मध्यान्ह 12:30 बजे किया जायेगा तथा आय-व्ययक पर सामान्य चर्चा बुधवार, दिनांक 4 मार्च, 2020 एवं गुरूवार, दिनांक 5 मार्च, 2020 को होगी।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

(3) शुक्रवार, दिनांक 6 मार्च, 2020 से गुरूवार, दिनांक 26 मार्च, 2020 को अपराह्न 4:00 बजे तक वित्तीय वर्ष 2020-2021 के आय-व्ययक में सम्मिलित विभागों की अनुदान मांगों पर चर्चा होगी तत्पश्चात विनियोग विधेयक का पुर:स्थापन किया जायेगा।

(4) शुक्रवार, दिनांक 27 मार्च, 2020 को वित्तीय वर्ष 2020-2021 के आय-व्ययक की अनुदान की मांगों से संबंधित विनियोग विधेयक पर विचार एवं पारण होगा।

(5) वित्तीय वर्ष 2020-2021 के आय-व्ययक से संबंधित मंत्रियों के विभागों की अनुदान मांगों पर चर्चा हेतु समय का निर्धारण किया गया, जो इस प्रकार है :-

(1) श्री भूपेश बघेल, मुख्यमंत्री - 2 घंटे 30 मिनट
(2) श्री टी.एस. सिंहदेव, पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री - 2 घंटे 30 मिनट
(3) श्री ताम्रध्वज साहू, गृह मंत्री - 2 घंटे 30 मिनट
(4) श्री रविन्द्र चौबे, संसदीय कार्य मंत्री - 2 घंटे
(5) डॉ. प्रेमसाय सिंह टेकाम, स्कूल शिक्षा मंत्री - 2 घंटे
(6) श्री मोहम्मद अकबर, वन मंत्री - 2 घंटे
(7) श्री कवासी लखमा, वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री - 2 घंटे
(8) डॉ. शिवकुमार डहरिया, नगरीय प्रशासन मंत्री - 2 घंटे
(9) श्री अमरजीत भगत, खाद्य मंत्री - 2 घंटे
(10) श्रीमती अनिला भेंडिया, महिला एवं बाल विकास मंत्री - 2 घंटे
(11) श्री जयसिंह अग्रवाल, राजस्व मंत्री - 2 घंटे
(12) श्री गुरू रूद्र कुमार, लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी मंत्री - 2 घंटे
(13) श्री उमेश पटेल, उच्च शिक्षा मंत्री - 2 घंटे

2. <u>विधि विषयक कार्य</u>

अध्यक्ष महोदय :- छत्तीसगढ़ प्लास्टिक और अन्य जैव अनाशित सामग्री (उपयोग और निस्तारण का विनियमन) विधेयक, 2020 पर चर्चा हेतु 45 मिनट का समय निर्धारित किया जाता है।

अध्यक्ष महोदय :- अब इसके संबंध में श्री रविन्द्र चौबे, संसदीय कार्य मंत्री प्रस्ताव करेंगे।

श्री रविन्द्र चौबे, संसदीय कार्य मंत्री :- अध्यक्ष महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं कि सदन कार्यमंत्रणा समिति के प्रतिवेदन में की गई सिफारिशों को स्वीकृति देता है।

अध्यक्ष महोदय :- प्रस्ताव प्रस्तुत हुआ।

अध्यक्ष महोदय :- प्रश्न यह है कि सदन कार्य मंत्रणा समिति के प्रतिवेदन में की गई सिफारिशों को सदन स्वीकृति देता है।

असंशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

समय :

3:04 बजे

<u>अध्यादेश का पटल पर रखा जाना</u>

<u>छत्तीसगढ़ सहकारी सोसाइटी (संशोधन) अध्यादेश, 2020 (क्रमांक 1 सन् 2020)</u>

सहकारिता मंत्री (डॉ. प्रेमसाय सिंह टेकाम) :- अध्यक्ष महोदय, मैं भारत के संविधान के अनुच्छेद 213 की अपेक्षानुसार छत्तीसगढ़ सहकारी सोसाइटी (संशोधन) अध्यादेश, 2020 (क्रमांक 1 सन् 2020) पटल पर रखता हूं।

<u>पत्रों का पटल पर रखा जाना</u>

<u>(1) महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना का वार्षिक प्रतिवेदन वर्ष 2018-19</u>

पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री (श्री टी.एस. सिंहदेव) :- अध्यक्ष महोदय, मैं राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम, 2005 (क्रमांक 42 सन् 2005) की धारा 12 की उपधारा (3) के पद (च) की अपेक्षानुसार महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना का वार्षिक प्रतिवेदन वर्ष 2018-19 पटल पर रखता हूं।

<u>(2) छत्तीसगढ़ पुलिस हाउसिंग कार्पोरेशन लिमिटेड का सातवां वार्षिक प्रतिवेदन वर्ष 2017-2018</u>

गृह मंत्री (श्री ताम्रध्वज साहू) :- सम्माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं कंपनी अधिनियम, 201(क्रमांक 18 सन् 2013) की धारा 395 की उपधारा (1) के पद (बी) की अपेक्षानुसार छत्तीसगढ़ पुलिस हाउसिंग कार्पोरेशन लिमिटेड का सातवां वार्षिक प्रतिवेदन वर्ष 2017-18 पटल पर रखता हूं।

<u>(3) छत्तीसगढ़ गौसेवा आयोग अधिनियम 2004 (क्रमांक 23 सन् 2004)</u>

पशुधन विकास मंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) :- अध्यक्ष महोदय, मैं छत्तीसगढ़ गौसेवा आयोग अधिनियम 2004 (क्रमांक 23 सन् 2004) की धारा 18 की उपधारा (2) की अपेक्षानुसार छत्तीसगढ़ राज्य गौसेवा आयोग का वार्षिक प्रतिवेदन वर्ष 2019-2020 एवं उस पर राज्य सराकर द्वारा की गई कार्यवाही का प्रतिवेदन पटल पर रखता हूं।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

समय :
3:05 बजे **नवम्बर-दिसम्बर, 2019 सत्र के समय पूर्व सत्रावसान के कारण बैठक हेतु पूर्व निर्धारित तिथि की मुद्रित प्रश्नोत्तरी का पटल पर रखा जाना**

अध्यक्ष महोदय :- पंचम विधानसभा के नवम्बर-दिसम्बर 2019 सत्र का दिनांक 02 दिसम्बर, 2019 को सत्रावसान हो जाने के कारण बैठक हेतु पूर्व निर्धारित तिथि दिनांक 03, 04, 05 एवं 06 दिसम्बर, 2019 को मुद्रित प्रश्नोत्तरी प्रमुख सचिव, विधानसभा सदन के पटल पर रखेंगे।

प्रमुख सचिव, विधानसभा (श्री चन्द्र शेखर गंगराड़े) :- मैं, अध्यक्ष के स्थायी आदेश क्रमांक 13-ख की अपेक्षानुसार नवम्बर-दिसम्बर, 2019 सत्र का दिनांक 02 दिसम्बर, 2019 को समयपूर्व सत्रावसान के कारण बैठक हेतु पूर्व निर्धारित तिथि 03, 04, 05 एवं 06 दिसम्बर, 2019 की मुद्रित प्रश्नोत्तरी सदन के पटल पर रखता हूं।

समय :
3:06 बजे **नवम्बर-दिसम्बर, 2019 सत्र के प्रश्नों के अपूर्ण उत्तरों के पूर्ण उत्तरों का संकलन सदन के पटल पर रखा जाना**

अध्यक्ष महोदय :- नवम्बर-दिसम्बर, 2019 सत्र के प्रश्नों के अपूर्ण उत्तरों के पूर्ण उत्तरों का संकलन प्रमुख सचिव, विधानसभा सदन के पटल पर रखेंगे।

प्रमुख सचिव, विधानसभा (श्री चन्द्र शेखर गंगराड़े) :- मैं, अध्यक्ष के स्थायी आदेश क्रमांक- 13-ख की अपेक्षानुसार नवम्बर-दिसम्बर, 2019 सत्र के प्रश्नों के अपूर्ण उत्तरों के पूर्ण उत्तरों का संकलन सदन के पटल पर रखता हूं।

नियम 267-क के अधीन सूचनाएं तथा उनके उत्तरों का संकलन

अध्यक्ष महोदय :- नियम 267-क के अधीन नवम्बर-दिसम्बर, 2019 सत्र में सदन में पढ़ी गई सूचनाओं तथा उनके उत्तरों का संकलन प्रमुख सचिव, विधानसभा सदन के पटल पर रखेंगे।

प्रमुख सचिव, विधान सभा (श्री चन्द्र शेखर गंगराड़े) :- मैं, नियम 267-क के अधीन नवम्बर-दिसम्बर, 2019 सत्र में सदन में पढ़ी गई सूचनाओं तथा उनके उत्तरों का संकलन सदन के पटल पर रखता हूं।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

समय :
3:07 बजे

माननीय राज्यपाल महोदया की अनुमति प्राप्त विधेयकों की सूचना

अध्यक्ष महोदय :- पंचम विधान सभा के नवम्बर-दिसम्बर, 2019 सत्र में पारित कुल 8 विधेयकों में से सभी 8 विधेयकों पर माननीय राज्यपाल की अनुमति प्राप्त हो गई है। अनुमति प्राप्त विधेयकों का विवरण प्रमुख सचिव, विधानसभा सदन के पटल पर रखेंगे।

प्रमुख सचिव, विधानसभा (श्री चन्द्र शेखर गंगराड़े) :- पंचम विधान सभा के नवम्बर-दिसम्बर, 2019 सत्र में पारित कुल 8 विधेयकों में से सभी 8 विधेयकों पर माननीय राज्यपाल की अनुमति प्राप्त हो गई है, जिसका विवरण सदन के पटल पर रखता हूं।

अध्यक्ष महोदय :- अनुमति प्राप्त विधेयकों के नामों को दर्शाने वाला विवरण पत्रक भाग-दो के माध्यम से माननीय सदस्यों को पृथक से वितरित किया जा रहा है।

समय :
3:08 बजे

सभापति तालिका की घोषणा

अध्यक्ष महोदय :- विधान सभा की नियमावली के नियम 9 के उप नियम (1) के अधीन मैं निम्नलिखित सदस्यों को सभापति तालिका के लिए नाम-निर्दिष्ट करता हूँ :-

1. श्री सत्यनारायण शर्मा,
2. श्री धनेन्द्र साहू,
3. श्री देवेन्द्र बहादुर सिंह,
4. श्री शिवरतन शर्मा,
5. श्री देवव्रत सिंह

अध्यक्ष महोदय :- आज की कार्यसूची में जो ध्यानाकर्षण सूचनाएं रखी गई हैं, मैं उन्हें कल के लिए स्थानान्तरित करता हूं। शून्यकाल की सूचनाएं बाद में लेंगे।

समय :
3:09 बजे

वित्तीय वर्ष 2019-2020 के तृतीय अनुपूरक अनुमान का उपस्थापन

मुख्यमंत्री (श्री भूपेश बघेल) :- अध्यक्ष महोदय, मैं, राज्यपाल महोदया के निर्देशानुसार वित्तीय वर्ष 2019-2020 के तृतीय अनुपूरक अनुमान का उपस्थापन करता हूं।

अध्यक्ष महोदय :- मैं, अनुपूरक अनुमान की मांगों पर चर्चा और मतदान के लिए शुक्रवार, दिनांक 28 फरवरी, 2020 की तिथि निर्धारित करता हूं।

असंशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

अध्यक्ष महोदय :- आज की कार्यसूची में सम्मिलित नियम 139 की चर्चा आगामी दिवस के लिए रखी जाती है।

समय :
3:10 बजे

<u>निलंबन समाप्ति की घोषणा</u>

अध्यक्ष महोदय :- प्रक्रिया तथा कार्य संचालन सम्बन्धी नियमावली के नियम 250(1) के तहत माननीय सदस्यगण अपने स्थान को छोड़कर निलंबित गर्भगृह में प्रवेश करने के कारण सभा की कार्यवाही से स्वमेव निलंबित हो गए थे। मैं उनका निलंबन समाप्त करता हूं।

अध्यक्ष महोदय :- सभा की कार्यवाही बुधवार दिनांक 26 फरवरी, 2020 को 11.00 बजे तक के लिए स्थगित।

(03 बजकर 10 मिनट पर विधान सभा की कार्यवाही बुधवार, दिनांक 26 फरवरी, 2020 (फाल्गुन 7, शक संवत् 1941) के पूर्वाह्न 11.00 बजे तक के लिए स्थगित हुई)

रायपुर (छत्तीसगढ़)
दिनांक : 25 फरवरी, 2020

चन्द्र शेखर गंगराड़े
प्रमुख सचिव
छत्तीसगढ़ विधान सभा

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं